देश दर्पण संवाद

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

हम खबर नहीं, आईना दिखाते हैं

इंदौर, मध्य प्रदेश सोमवार 09 नवंबर, 2026, कार्तिक कृष्ण पक्ष, विक्रम संवत 2083, वर्ष - 1, अंक - 09, पृष्ठ - 8 , मूल्य - रु 2

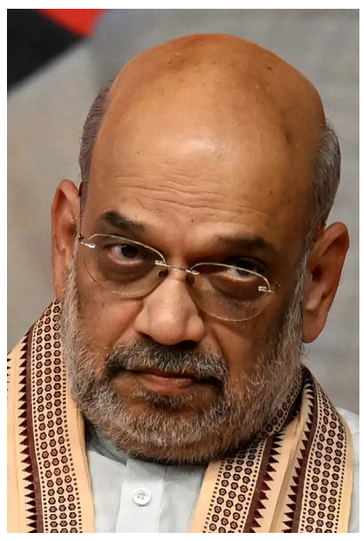
खराखरा

18 कैरेट : ₹1,08,450
22 कैरेट : ₹1,32,550
24 कैरेट : ₹1,44,600

सकारात्मक सोमवारसरः

प्रिय पाठकों,
सप्रेम नमस्कार! शुभ सोमवार! आज 'देश दर्पण संवाद' का यह नौवां अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। आपके निरंतर प्रेम, स्नेह व विश्वास ने हमारे संकल्प को और अधिक मजबूत किया है, जिसके लिए हम हृदय से आभारी हैं।
त्योहारों की उमंग और उल्लास के बाद, अब समय है नई ऊर्जा और दोगुनी लगन के साथ अपने लक्ष्यों की ओर कदम बढ़ाने का।
मौसम में आ रहा यह सुखद बदलाव हमें सिखाता है कि आगे बढ़ते रहना और समय के साथ खुद को बेहतर बनाना ही जीवन है।
हर नई सुबह अपने साथ नई संभावनाएं और नए अवसर लेकर आती है।

'SIR' पर चर्चा को लेकर सियासी घमासानः अमित शाह के वायरल वीडियो पर राहुल गांधी और प्रहलाद जोशी आमने-सामने



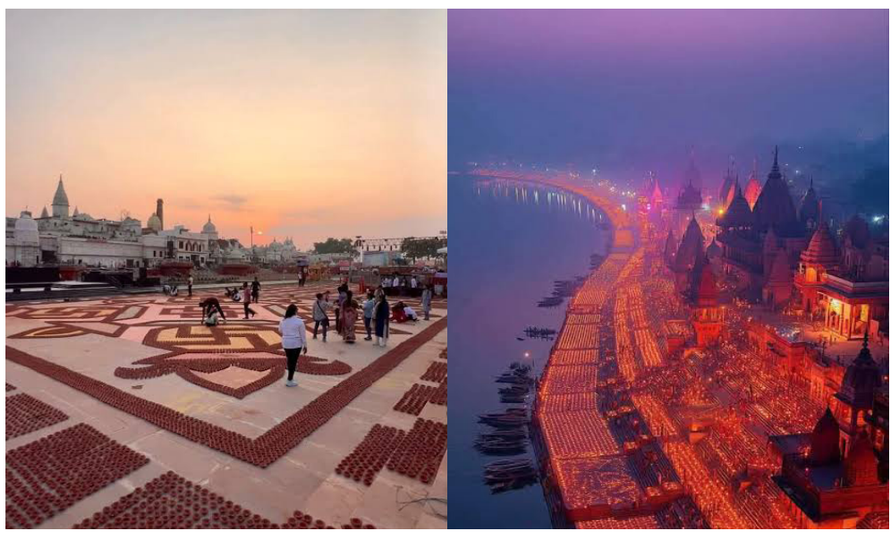
नई दिल्ली
'SIR' के मुद्दे पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के दो अलग-अलग समय के बयानों वाला एक वीडियो सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना हुआ है। इस वीडियो को लेकर लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और केंद्रीय मंत्री प्रहलाद जोशी के बीच तीखी जुबानी जंग छिड़ गई है।
विवाद की जड़ और विपक्ष का तंजः
पिछले कुछ समय से राहुल गांधी लगातार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 'SIR' के मुद्दे पर खुली बहस की चुनौती दे रहे हैं। इसके जवाब में 5 नवंबर 2026 को हरियाणा के करनाल में एक रैली के दौरान अमित शाह ने कहा था कि अगर विपक्ष वाकई चर्चा चाहता है, तो सरकार संसद का विशेष सत्र बुलाने के लिए तैयार है।
हालांकि, इसके साथ ही अमित शाह का 10 दिसंबर 2025 का एक पुराना वीडियो वायरल हो गया, जिसमें वे संसद में कह रहे हैं कि 'SIR' पर सदन में चर्चा नहीं हो सकती। राहुल गांधी ने इन दोनों बयानों को साझा करते हुए तंज कसा कि अमित शाह जी प्रधानमंत्री मोदी को 'कन्फ्यूज' कर रहे हैं और उन्हें खुली बहस के लिए तैयार करना चाहिए।
सरकार का पलटवारः
राहुल गांधी की इस पोस्ट पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रहलाद जोशी ने तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने वायरल वीडियो को 'क्रॉप' और 'आउट ऑफ कंटेक्स्ट' बताते हुए कहा कि राहुल गांधी ने इस मुद्दे पर अपना होमवर्क नहीं किया है। जोशी ने कहा कि जब विपक्ष चुनाव जीतता है तो सब ठीक रहता है, लेकिन हारने पर सवाल खड़े किए जाते हैं। उन्होंने चुनौती दी कि अब जब गृह मंत्री खुद संसद में चर्चा के लिए तैयार हैं, तो राहुल गांधी तथ्य लेकर आएं और सदन में बहस करें।
क्या है वायरल वीडियो की सच्चाई?
तथ्यों की पड़ताल में सामने आया है कि अमित शाह के दोनों वीडियो सही हैं, लेकिन उनके संदर्भ बिल्कुल अलग हैं।
दिसंबर 2025 में लोकसभा में चुनाव सुधारों पर चर्चा के दौरान सरकार ने यह कहते हुए 'SIR' पर चर्चा की मांग खारिज कर दी थी कि यह चुनाव आयोग के अधिकार क्षेत्र का विषय है, और आयोग सरकार के अधीन काम नहीं करता।
वहीं, करनाल रैली का हालिया बयान विपक्ष द्वारा लगातार दी जा रही राजनीतिक बहस की चुनौती के जवाब में दिया गया है।



पत्रकारिता के उच्च मापदंडों पर खरे उतरने के लिए बप्पा हमें विवेक और शक्ति प्रदान करें, यही हमारी मंगलकामना है। सत्य को सामने लाने की 'देश दर्पण संवाद' की इस नई यात्रा में सुधी पाठकों का स्नेह, समर्थन और विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी बनेगा।

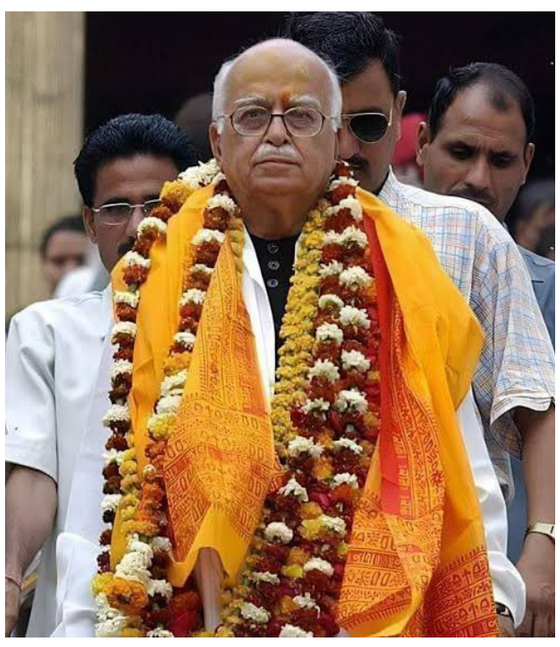
देश दर्पण संवाद
हम ख़बर नहीं, आईना दिखाते हैं

अयोध्या का महा-दीपोत्सवः 56 घाटों पर 30 लाख दीयों का नया कीर्तिमान



अयोध्याः रामनगरी अयोध्या में आयोजित दसवें दीपोत्सव ने रोशनी और आस्था का एक नया इतिहास रच दिया है। शनिवार शाम सरयू नदी के किनारे राम की पैड़ी सहित 56 घाटों पर रिकॉर्ड 30 लाख दीये प्रज्ज्वलित किए गए, जिससे पूरी अयोध्या रोशनी के महासागर में तब्दील हो गई।
इन दीयों की अद्भुत कतारों को सजाने में 35 हजार छात्रों ने अपना विशेष योगदान दिया। इस भव्य आयोजन में देश के उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। दीपोत्सव के इस पावन अवसर पर रामायण के सातों कांडों पर आधारित 22 आकर्षक झांकियां भी निकाली गईं।
इनमें रामरथ, रामदरबार और पुष्पक विमान दर्शकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहे।
आसमान में उकेरी गई रामकथा
कार्यक्रम में आस्था के साथ-साथ आधुनिक तकनीक का शानदार संगम देखने को मिला। 2,100 स्वदेशी ड्रोन्स की मदद से आसमान में रामकथा के मनमोहक दृश्य प्रस्तुत किए गए।
इसके अलावा 8 मिनट का भव्य लेजर शो, 20 मिनट की प्रोजेक्शन मैपिंग और शानदार आतिशबाजी ने इस उत्सव को और भी अद्भुत बना दिया।
हर साल बन रहे नए रिकॉर्ड
अयोध्या में दीपोत्सव की शुरुआत साल 2017 में 1.7 लाख दीयों के साथ हुई थी।
समय के साथ इसकी भव्यता बढ़ती गई; 2022 में 15.8 लाख और राममंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद 2024 में 25.2 लाख दीयों का रिकॉर्ड बना था। पिछले वर्ष (2025) यह संख्या 26.2 लाख थी, जिसे इस बार 30 लाख दीयों के ऐतिहासिक आंकड़े के साथ पीछे छोड़ दिया गया है।

सियासत के 'शिखर पुरुष' का 100वें साल में प्रवेशः जन्मभूमि कराची, बचपन का वो घर और छलकती आंखें... पढ़िए आडवाणी की सबसे भावुक दास्तान



नई दिल्ली :
सियासत के 'शिखर पुरुष' का 100वें साल में प्रवेशः जन्मभूमि कराची, बचपन का वो घर और छलकती आंखें... पढ़िए आडवाणी की सबसे भावुक दास्तान
अविभाजित भारत के कराची में जन्मे और देश की राजनीति की दिशा बदलने वाले 'भारत रत्न' लालकृष्ण आडवाणी 99 वर्ष के हो गए हैं। उनके जन्मदिन पर पढ़िए 2005 के उस ऐतिहासिक पाकिस्तानी दौरे का किस्सा, जब साठ साल बाद अपने पुराने आशियाने की दहलीज पर कदम रखते ही यह दिग्गज राजनेता जज्बाती हो गया था।
भारतीय जनता पार्टी को फर्श से अर्श तक पहुंचाने वाले दिग्गज राजनेता और पूर्व उप-प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने आज अपने जीवन के 100वें वर्ष में प्रवेश कर लिया है। 8 नवंबर 1927 को अविभाजित भारत के कराची में जन्मे आडवाणी जी का जीवन, विभाजन के दर्द और राष्ट्र निर्माण के कड़े संघर्षों की एक खुली किताब है। आज उनके 99वें जन्मदिन के इस ऐतिहासिक मौके पर बरबस ही साल 2005 की उनकी वह पाकिस्तान यात्रा याद आती है, जब सियासत का यह कद्दावर चेहरा अपनी जन्मभूमि को देखकर एक आम इंसान की तरह भावुक हो गया था।
60 साल बाद लौटीं बचपन की स्मृतियां
आजादी के वक्त बंटवारे की विभीषिका ने आडवाणी जी को अपना घर-बार छोड़कर भारत आने पर मजबूर कर दिया था। लेकिन कराची की पारसी कॉलोनी स्थित उनका पुराना घर उनके जेहन में हमेशा बसा रहा। जून 2005 में जब वे एक विशेष यात्रा पर पाकिस्तान गए, तो अपनी जड़ों को देखने की ललक उन्हें कराची खींच ले गई। लगभग साठ साल के लंबे अरसे बाद जब उन्होंने अपने उसी पुराने दो-मंजिला आशियाने में कदम रखा, तो पुरानी यादों का सैलाब उमड़ पड़ा और वे खुद के जज्बातों को रोक नहीं पाए।
पुरानी अलमारी और बिस्तर देख रुंध गया गला
वक्त के साथ भले ही उस घर का रूप-रंग बदल चुका था, लेकिन आडवाणी जी के लिए वह सिर्फ ईंट-गारे की इमारत नहीं थी। जब वे घर के भीतर गए, तो वहां आज भी मौजूद अपने बचपन के पुराने बिस्तर और अलमारी को देखकर वे चकित रह गए। उस वक्त पाकिस्तानी मीडिया से मुखातिब होते हुए उनका गला रुंध गया था।
उन्होंने नम आंखों के साथ कहा था, "यही वो जगह है जहां मेरा पूरा बचपन बीता है, आज यहां आकर मुझे अपने बचपन के एक-एक दिन की याद आ गई है।"
पाकिस्तान में उनका यह दौरा बेहद खास रहा, जहां उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया था और आडवाणी जी ने भी उसी अपनेपन से वहां के लोगों को जवाब दिया।
स्वयंसेवक से 'भारत रत्न' तक का बेमिसाल सफर
आडवाणी जी की राजनीतिक यात्रा देश के इतिहास का एक अहम पन्ना है। कम उम्र में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से जुड़ने के बाद, उन्होंने 1951 में स्थापित जनसंघ के साथ अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की। 1990 में उनकी ऐतिहासिक 'रथ यात्रा' ने देश की सियासत और राष्ट्रीय विमर्श की पूरी दिशा ही बदल कर रख दी।
पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में उन्होंने 2002 से 2004 तक देश के उप-प्रधानमंत्री और गृह मंत्री का अहम दायित्व निभाया। राष्ट्र के प्रति उनके इसी अथक और बेमिसाल समर्पण के लिए उन्हें साल 2015 में 'पद्म विभूषण' और इसी साल (2024) देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया गया है।

सीबीएसई बोर्ड परीक्षा 2027 की डेटशीट जारी, 16 फरवरी से शुरू होंगी 10वीं और 12वीं की परीक्षाएं



नई दिल्ली
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने शुक्रवार को कक्षा 10 और 12 की बोर्ड परीक्षाओं 2027 की डेटशीट जारी कर दी। दोनों कक्षाओं की परीक्षाएं 16 फरवरी 2027 से शुरू होंगी। रिपोर्टों के अनुसार इस बार 46 लाख से अधिक विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया है।
कब तक चलेंगी परीक्षाएं
कक्षा 10 की परीक्षाएं 16 फरवरी से 9 मार्च तक चलेंगी, जबकि कक्षा 12 की परीक्षाएं 16 फरवरी से 9 अप्रैल तक होंगी। परीक्षाएं सुबह 10:30 बजे शुरू होंगी, और अलग-अलग विषयों के अनुसार पेपर की अवधि अलग रहेगी। पिछले साल 10वीं की परीक्षा 17 फरवरी से 11 मार्च और 12वीं की 17 फरवरी से 10 अप्रैल तक हुई थी।
मुख्य विषयों की तारीखें
कक्षा 12 में परीक्षा की शुरुआत 16 फरवरी को भौतिकी से होगी। इसके बाद 23 फरवरी को एकाउंटेंसी, 25 फरवरी को भूगोल और 27 फरवरी को रसायन विज्ञान का पेपर होगा। कक्षा 10 में 17 फरवरी को गणित (स्टैंडर्ड और बेसिक), 22 फरवरी को विज्ञान, 26 फरवरी को अंग्रेजी और 3 मार्च को हिंदी (कोर्स ए और बी) की परीक्षा होगी।
विद्यार्थियों के लिए सलाह
विद्यार्थी पूरी विषयवार डेटशीट बोर्ड की वेबसाइट cbse.gov.in पर देख और डाउनलोड कर सकते हैं। विशेषज्ञ आमतौर पर सलाह देते हैं कि डेटशीट आते ही पेपरों के बीच के अंतराल के हिसाब से पढ़ाई की योजना बना ली जाए। जिन विषयों में ज्यादा अभ्यास चाहिए, जैसे गणित, भौतिकी और रसायन, उन्हें पहले दौर की तैयारी में प्राथमिकता देना लाभदायक रहता है। बोर्ड पहले ही सैंपल पेपर जारी कर चुका है, जिनसे प्रश्नपत्र के ढांचे और अंक-विभाजन को समझने में मदद मिल सकती है।
बोर्ड परीक्षाओं से पहले प्रैक्टिकल और आंतरिक मूल्यांकन आमतौर पर जनवरी में होते हैं, इसलिए विद्यार्थियों के पास तैयारी के लिए करीब तीन महीने का समय बचा है। स्कूलों से भी उम्मीद है कि वे इसी कार्यक्रम के अनुसार पाठ्यक्रम पूरा कराएंगे और रिवीजन की व्यवस्था करेंगे।

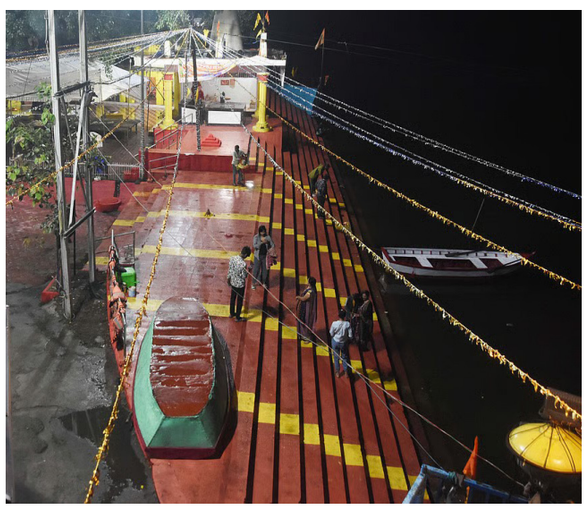
मतदाता सूची से छूटे लोगों को एक और मौकाः सात राज्यों में चुनाव आयोग का निर्देश

नई दिल्ली :
चुनाव आयोग ने शुक्रवार को विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान मसौदा मतदाता सूची से बाहर रहे लोगों को अंतिम सूची में शामिल होने का एक और अवसर देने का फैसला किया। यह निर्देश दिल्ली, महाराष्ट्र, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, झारखंड, तेलंगाना और नागालैंड के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों को दिया गया है।
किन्हें मिलेगा मौका
यह सुविधा उन मतदाताओं के लिए है जिन्हें "अनुपस्थित, स्थानांतरित, मृत या दोहरे" (एएसडीडी) की श्रेणी में चिह्नित किया गया था और जिनके नाम मसौदा सूची में नहीं आ सके। रिपोर्टों के अनुसार ऐसे मतदाताओं की संख्या करीब 4.5 करोड़ है। आयोग ने अधिकारियों से कहा है कि वे बूथ-वार नई सूचियां बनाएं, गणना प्रपत्र उपलब्ध कराएं और सत्यापन की प्रक्रिया पूरी करें। साथ ही एक निगरानी तंत्र बनाने को कहा गया है, ताकि कोई भी पात्र मतदाता अंतिम सूची में शामिल होने से वंचित न रहे।
विवाद की पृष्ठभूमि
यह फैसला ऐसे समय आया है जब एसआईआर प्रक्रिया पर करोड़ों मतदाताओं के नाम कटने के आरोप लग रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार इस मामले में सुप्रीम कोर्ट की ओर से उठाए गए सवालों के बाद आयोग ने यह कदम उठाया। विपक्ष इस प्रक्रिया पर लगातार सवाल उठा रहा है।
राजनीतिक प्रतिक्रिया
कांग्रेस ने आयोग के इस कदम को "यू-टर्न" बताया और इसे गलत तरीके से नाम हटाए जाने की "देर से की गई स्वीकारोक्ति" कहा। दूसरी ओर, आयोग का निर्देश यह संकेत देता है कि वह सूची को अधिक समावेशी बनाने के लिए अतिरिक्त कदम उठा रहा है। इस पर विपक्ष और आयोग के दृष्टिकोण अलग-अलग हैं।
मतदाताओं को क्या करना चाहिए
जिन लोगों के नाम मसौदा सूची में नहीं हैं, वे अपने बूथ स्तर अधिकारी (बीएलओ) से संपर्क कर सकते हैं या निर्धारित फॉर्म के जरिए आवेदन कर सकते हैं।
विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि आवेदन के साथ पहचान और निवास के दस्तावेज तैयार रखें। अंतिम सूची के प्रकाशन से पहले अपना नाम जांच लेना जरूरी है, क्योंकि उसी सूची के आधार पर आगे के चुनावों में



आगामी 13 नवंबर को 'नहाय-खाय' की रस्म के साथ इस पावन पर्व का विधिवत शुभारंभ होगा

छठ महापर्व 13 नवंबर से आगाज, भोपाल के 60 स्थानों पर सजेंगे घाट



देश दर्पण संवाद /भोपाल- सूर्य आराधना व लोक आस्था के चार दिवसीय महापर्व 'छठ' की तैयारियां राजधानी में जोरों पर हैं। आगामी 13 नवंबर को 'नहाय-खाय' की रस्म के साथ इस पावन पर्व का विधिवत शुभारंभ होगा, जिसके साथ ही व्रती महिलाओं के 36 घंटे के निर्जला व्रत का संकल्प शुरू हो जाएगा।

शहर में कुल 60 स्थानों पर छठ पूजा के विशेष आयोजन किए जा रहे हैं, जहां घाटों की साफ-सफाई से लेकर कुंड और वेदियां बनाने का काम अंतिम चरण में है।

शहर में तैयारियों के मुख्य आकर्षण:

सरयू सरोवर (अयोध्या नगर): यहां छठ मैया का नौका विहार श्रद्धालुओं के लिए मुख्य आकर्षण का केंद्र रहेगा। सरोवर के जल को महकाने के लिए एक क्विंटल गुलाब की पंखुड़ियां डाली जाएंगी और 4 बतखें भी छोड़ी जाएंगी।

शीतलदास की बगिया: घाट पर आकर्षक सजावट के साथ-साथ आतिशबाजी की जाएगी। 15 नवंबर को डूबते सूर्य को अर्घ्य देने के पश्चात बड़े तालाब में 2100 दीप प्रवाहित किए जाएंगे।

सरस्वती मंदिर परिसर (बरखेड़ा भेल): यहां पूजा के लिए 5 विशेष कुंड और लगभग दो हजार वेदियां तैयार की गई हैं। इन पूजा स्थलों की बुकिंग 10 नवंबर से टोकन के माध्यम से शुरू होगी।

पांच नंबर तालाब: स्थानीय समितियों और समाज के सदस्यों द्वारा श्रमदान कर घाटों, मंदिर और प्रतिमाओं की साफ-सफाई की गई है। पर्व के दौरान विभिन्न घाटों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम और पारंपरिक भोजपुरी व मैथिली लोकगीतों की प्रस्तुतियां भी दी जाएंगी। महापर्व का समापन 16 नवंबर को उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ होगा।

विकास की नई उड़ान: इंदौर-उज्जैन-भोपाल में बनेंगी 15 नई टाउनशिप, 4 प्रमुख सिंचाई परियोजनाओं को भी मिली हरी झंडी

देश दर्पण संवाद/ भोपाल - आगामी 21 वर्षों में राज्य सरकार भोपाल, इंदौर और उज्जैन रीजन में 15 नई सैटेलाइट टाउनशिप विकसित करने जा रही है।

हाल ही में हुई कैबिनेट बैठक में मुख्यमंत्री नगरीय क्षेत्र अधोसंरचना निर्माण योजना के तहत इसके लिए 700 करोड़ रुपए का अतिरिक्त बजट मंजूर किया गया है।

इन नई टाउनशिप में कमर्शियल स्पेस, आईटी और नॉन-हैजार्डस इंडस्ट्री के लिए जगह उपलब्ध होगी, जिससे चरणबद्ध रूप से लगभग 20 लाख नए रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

कैबिनेट के अन्य अहम फैसले:

सिंचाई क्षमता में विस्तार: कृषि और जल प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए 4,103.73 करोड़ रुपए की लागत से 4 प्रमुख सिंचाई परियोजनाओं (सीतापुर हनुमना, टेम, मझगांव और सेवरखेड़ी-सिलारखेड़ी) को मंजूरी दी गई है।

इससे मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, उज्जैन, विदिशा और पन्ना जिलों में करीब 2 लाख हेक्टेयर में सिंचाई क्षमता का विकास होगा।

गांधी सागर में 'डेस्टिनेशन' कैबिनेट:

अगली कैबिनेट बैठक 18 नवंबर को मंदसौर के गांधी सागर में आयोजित की जाएगी, जिसका मुख्य फोकस उद्योग और ऊर्जा पर रहेगा।

वन एवं वन्यजीव संरक्षण: वन विभाग की विभिन्न योजनाओं, वनीकरण और राष्ट्रीय उद्यान संरक्षण के लिए 17,240 करोड़ रुपए मंजूर किए गए हैं।

खाद और स्वेच्छानुदान पर चर्चा:

कैबिनेट बैठक के दौरान कृषि मंत्री सहित अन्य मंत्रियों ने



प्रदेश में खाद की किल्लत का मुद्दा उठाया। साथ ही, मंत्रियों के स्वेच्छानुदान की निधि को 350 करोड़ रुपए से बढ़ाकर 500 करोड़ रुपए करने पर भी सहमति जताई गई।

अन्य स्वीकृतियां:

धान खरीदी के पंजीयन की तारीख 4 नवंबर तक बढ़ा दी गई है, स्वास्थ्य क्षेत्र में निवेश के लिए 610.51 करोड़ और लोकायुक्त संगठन के लिए 573.85 करोड़ रुपए मंजूर किए गए हैं।

एक महीने में मांगें पूरी करने का आश्वासन

सीएम के आश्वासन पर खत्म हुई सफाईकर्मियों की हड़ताल



भोपाल (देश दर्पण संवाद)। दीपावली से ठीक पहले मध्य प्रदेश के लोगों के लिए एक बड़ी राहत की खबर है। प्रदेशभर में पिछले तीन दिनों से चल रही नगर निगम और नगरीय निकायों के सफाईकर्मियों की हड़ताल शुक्रवार रात समाप्त हो गई है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ अखिल भारतीय सफाई मजदूर कांग्रेस ट्रेड यूनियन के नेताओं की सीधी वार्ता के बाद काम पर लौटने का ऐलान किया गया।

एक महीने में मांगें पूरी करने का आश्वासन

सरकार ने कर्मचारियों की मांगों को एक महीने के भीतर पूरा करने का आश्वासन दिया है।

इस समझौते के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

2017 तक के 29 दिवस वाले दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों को विनियमित किया जाएगा।

वर्तमान में सेवारत प्रदेश के सभी विनियमित कर्मचारियों को नियमित (स्थायी) किया जाएगा।

ठेका प्रथा के नियमों में ढील देने और पति-पत्नी की मृत्यु से जुड़े सेवा प्रकरणों (अनुकंपा आदि) के लिए एक संयुक्त कमेटी बनेगी, जिसमें यूनियन के प्रतिनिधि भी शामिल होंगे।

इस फैसले से अकेले भोपाल में 8 हजार दैनिक वेतनभोगी और करीब 1100 विनियमित कर्मियों को सीधा लाभ मिलेगा। वहीं, पूरे प्रदेश में 1 लाख से ज्यादा कर्मचारी लाभान्वित होंगे।

सड़कों पर उतरे अफसर, 24 घंटे में सफाई का लक्ष्य

हड़ताल के कारण पिछले तीन दिनों में भोपाल की सड़कों पर लगभग 3100 टन कचरा इकट्ठा हो गया था। हड़ताल खत्म होने के तुरंत बाद पूरा अमला सफाई व्यवस्था सुधारने में जुट गया।

सकारात्मक संदेश देने के लिए महापौर मालती राय, कलेक्टर प्रियंक मिश्रा और निगम कमिश्नर रामप्रकाश अहिरवार खुद झाड़ू लेकर सड़कों पर उतरे और सफाई अभियान की शुरुआत की। प्रशासन ने दावा किया है कि अगले 24 घंटे के भीतर शहर से सारा कचरा साफ कर दिया जाएगा।

नाविका – द न्यू बिगिनिंग वूमन्स क्लब का प्री-दिवाली सेलिब्रेशन हर्षोल्लास के साथ संपन्न



भोपाल। 'Navika – The New Beginning' वूमन्स क्लब द्वारा प्री-दिवाली सेलिब्रेशन का भव्य एवं रंगारंग आयोजन उत्साह और उमंग के साथ किया गया। दीपावली के स्वागत में आयोजित इस विशेष समारोह में लगभग 30 से 40 महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में 26 क्राउन होल्डर एवं मॉडल प्रिया तिवारी विशेष रूप से उपस्थित रहीं। उनकी गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर महिलाओं ने आतिशबाजी, मनोरंजक गेम्स, डांस और स्वादिष्ट व्यंजनों का भरपूर आनंद लिया। पूरे आयोजन में उत्सव, मनोरंजन और आपसी सौहार्द का खूबसूरत माहौल देखने को मिला।

कार्यक्रम के दौरान आयोजित बेस्ट ड्रेस प्रतियोगिता में सुमन शर्मा विजेता रहीं। वहीं, विभिन्न मनोरंजक गेम्स में निधि, पूनम और काजल ने विजेता बनकर अपनी प्रतिभा और उत्साह का परिचय दिया।

आयोजन को सफल एवं यादगार बनाने में क्लब की होस्ट अंजू भास्कर एवं डिंपल पराशर का विशेष योगदान रहा। उनकी शानदार मेजबानी और बेहतर व्यवस्थाओं ने समारोह को और भी खास बना दिया।

यह प्री-दिवाली सेलिब्रेशन महिलाओं के लिए मनोरंजन, आपसी मेल-मिलाप और खुशियां साझा करने का एक यादगार अवसर साबित हुआ।

मप्र पंचायत उपचुनाव का बिगुल बजा: 4 दिसंबर को मतदान, 8 को नतीजे

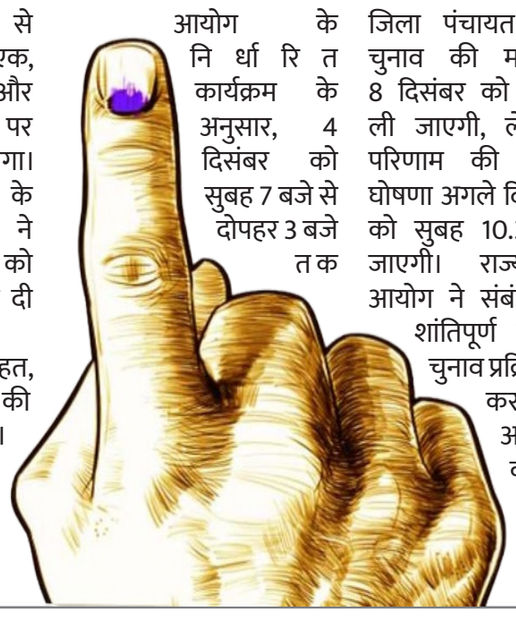
भोपाल (देश दर्पण संवाद)। मध्यप्रदेश में पंचायतों के रिक्त पदों पर उप-निर्वाचन 2026 का कार्यक्रम आधिकारिक रूप से घोषित कर दिया गया है। राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा जारी कार्यक्रम के अनुसार, प्रदेश में पंचायत उपचुनाव के लिए 4 दिसंबर को वोट डाले जाएंगे।

इस चुनाव के माध्यम से जिला पंचायत के एक, जनपद पंचायत के एक और सरपंच के पांच रिक्त पदों पर प्रतिनिधियों का चुनाव होगा। राज्य निर्वाचन आयोग के सचिव दिनेश श्रीवास्तव ने बताया कि उपचुनाव को लेकर तैयारियां शुरू कर दी गई हैं।

चुनावी कार्यक्रम के तहत, 12 नवंबर से नामांकन की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। चुनाव लड़ने के इच्छुक अभ्यर्थी 19 नवंबर तक अपना नाम-निर्देशन पत्र जमा कर सकेंगे।

प्राप्त नामांकन पत्रों की जांच 20 नवंबर को की जाएगी। वहीं, उम्मीदवार 23 नवंबर तक अपना नाम वापस ले सकेंगे और इसी दिन प्रत्याशियों को चुनाव प्रतीकों का आवंटन भी कर दिया जाएगा।

मतदान और परिणाम का समय:



आयोग के निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, 4 दिसंबर को सुबह 7 बजे से दोपहर 3 बजे तक मतदान प्रक्रिया चलेगी।

इसके बाद 8 दिसंबर को सुबह 8 बजे से विकासखंड मुख्यालयों पर ईवीएम (EVM) के माध्यम से वोटों की गिनती शुरू होगी।

सरपंच और जनपद पंचायत सदस्य के चुनाव परिणाम उसी दिन (8 दिसंबर) घोषित कर दिए जाएंगे। जिला पंचायत सदस्य के चुनाव की मतगणना भी 8 दिसंबर को ही पूरी कर ली जाएगी, लेकिन इसके परिणाम की आधिकारिक घोषणा अगले दिन, 9 दिसंबर को सुबह 10.30 बजे की जाएगी। राज्य निर्वाचन आयोग ने संबंधित क्षेत्रों में शांतिपूर्ण मतदान और चुनाव प्रक्रिया को संपन्न कराने के लिए अपनी कमर कस ली है।

महाकाल दरबार में धनतेरस का उल्लास: प्रशासनिक अमले ने नंदी हॉल में की पूजा, मंदिर व महालोक परिसर में आतिशबाजी पर लगा सख्त प्रतिबंध



उज्जैन- दीपोत्सव के पावन पर्व की शुरुआत धनतेरस पर श्री महाकालेश्वर मंदिर में आरोग्य, सुख-समृद्धि और राष्ट्र कल्याण की मंगल कामनाओं के साथ हुई।

श्री महाकालेश्वर मंदिर पुरोहित समिति के मार्गदर्शन में नंदी हॉल में विशेष पूजन-अर्चन का आयोजन किया गया, जहां धन और कुबेर को चांदी का सिक्का अर्पित किया गया।

इस भव्य अनुष्ठान में संभागायुक्त आशीष सिंह, कलेक्टर एवं मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष रौशन कुमार सिंह, एसपी प्रदीप शर्मा और प्रशासक प्रथम कौशिक ने सपत्नीक हिस्सा लिया।

सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने भगवान महाकाल का अभिषेक कर दीप प्रज्वलित किए और आरती में सम्मिलित हुए।

महालोक में पटाखों पर रहेगा पूर्ण प्रतिबंध

सुरक्षा और व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए दीपावली पर महाकालेश्वर मंदिर और श्री महालोक में आतिशबाजी पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है।

हालांकि, परंपरा का निर्वहन करते हुए भस्म आरती, अभ्यंग स्नान के बाद की आरती, संध्या आरती और शयन आरती में पूजा के अभिन्न अंग के रूप में केवल एक फुलझड़ी जलाई जाएगी।

इसके अलावा गर्भगृह, कोटितीर्थ कुंड और मंदिर परिसर में किसी भी प्रकार के पटाखे, अनार या ज्वलनशील पदार्थ लाना और जलाना पूरी तरह वर्जित रहेगा।

चिकित्सालय में हुई भगवान धन्वंतरि की पूजा

धनतेरस के अवसर पर महाकालेश्वर मंदिर प्रबंध समिति द्वारा संचालित चिकित्सालय में भी भगवान धन्वंतरि की विशेष पूजा-अर्चना की गई।

यह पूजन सहायक प्रशासक मूलचंद जूनवाल द्वारा संपन्न कराया गया। इस अवसर पर डॉ. देवेंद्र परमार, सह प्रभारी अनिता थोरात सहित मंदिर के कर्मचारी व चिकित्सा विभाग के कर्मी उपस्थित रहे।

खजाने पर भारी पड़ रही योजनाएं: एमपी में 100 रुपये की कमाई पर 124 रुपये का खर्च



भोपाल: लाड़ली बहना योजना का बजट 22,000 करोड़ तक पहुंचा; शुरुआती 4 महीनों में विकास कार्यों पर सिर्फ 23% खर्च

मध्य प्रदेश सरकार के वित्तीय प्रबंधन पर लोकलुभावन योजनाओं का असर अब साफ दिखने लगा है। राज्य सरकार की आमदनी और खर्च के बीच एक बड़ा असंतुलन पैदा हो गया है। मौजूदा आंकड़ों के अनुसार, मध्य प्रदेश सरकार यदि 100 रुपये राजस्व कमा रही है, तो उसके मुकाबले 124 रुपये खर्च कर रही है। इस बढ़ते वित्तीय घाटे ने राज्य के विकास कार्यों की रफ्तार को धीमा कर दिया है।

विकास कार्यों का बजट प्रभावित

खर्च बढ़ने का सबसे ज्यादा खामियाजा इंफ्रास्ट्रक्चर और विकास प्रोजेक्ट्स को उठाना पड़ रहा है। चालू वित्तीय वर्ष के शुरुआती चार महीनों की रिपोर्ट बताती है कि सरकार ने विकास कार्यों के लिए आवंटित बजट का केवल 23 प्रतिशत हिस्सा ही इस्तेमाल किया है। इसका सीधा अर्थ यह है कि नई सड़कें, अस्पताल, स्कूल और अन्य ढांचागत निर्माण कार्यों के लिए पैसों की भारी किल्लत का सामना करना पड़ रहा है।

लाड़ली बहना योजना का बढ़ता बोझ

खर्च और आमदनी के बीच इस बढ़ती खाई का सबसे प्रमुख कारण 'लाड़ली बहना योजना' को माना जा रहा है। महिलाओं को आर्थिक सहायता देने वाली इस महत्वाकांक्षी योजना का सालाना खर्च लगभग 22,000 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है। हालांकि इस योजना से बड़े वर्ग को सीधा फायदा मिल रहा है, लेकिन इसने सरकारी खजाने पर भारी दबाव डाल दिया है।

आर्थिक जानकारों का मानना है कि यदि आय के नए स्रोत विकसित नहीं किए गए और गैर-जरूरी खर्चों में कटौती नहीं हुई, तो आने वाले समय में मध्य प्रदेश को अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए और अधिक कर्ज लेना पड़ सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने बस्तर में सुरक्षाबलों के साथ मनाई दिवाली, कहा, "नक्सलवाद पर जीत के बाद पहली दिवाली"



नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को छत्तीसगढ़ के बस्तर में नक्सल-विरोधी अभियानों में तैनात सुरक्षाकर्मियों के साथ दिवाली मनाई। उन्होंने इसे खास अवसर बताते हुए कहा कि यह देश की पहली दिवाली है, जब दशकों पुरानी नक्सलवाद और माओवादी आतंक की लड़ाई जीती जा चुकी है।

प्रधानमंत्री के शब्दों में, यह पहली दिवाली है जब देश का हर जिला नक्सलवाद से मुक्त है और करोड़ों नागरिकों के मन से इसका डर खत्म हुआ है। उल्लेखनीय है कि सरकार ने इसी वर्ष 31 मार्च को देश को नक्सलवाद से मुक्त घोषित किया था। यह सुरक्षा बलों के साथ उनकी लगातार 13वीं दिवाली थी।

उन्होंने कहा कि 47 वर्षों में पहली बार बीते एक साल में ड्यूटी के दौरान सीआरपीएफ का एक भी जवान शहीद नहीं हुआ। इसे उन्होंने सरकार की नीतियों और जवानों के साहस, शौर्य व संयम की जीत बताया। प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि पहले की सरकारों ने नक्सलवाद को "लाइलाज बीमारी" मान लिया था, जबकि उनकी सरकार ने सुरक्षा बलों को फैसले लेने की आजादी दी।

साथ ही उन्होंने चेताया कि खतरा पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है और संगठनों के भीतर सक्रिय "दिमागी नक्सलियों" से सावधान रहना जरूरी है। (ये सभी बयान प्रधानमंत्री के हैं।)

लोकतंत्र के पर्व में कोई न छूटे: चुनाव आयोग का बड़ा फैसला, 7 राज्यों के मतदाताओं को फिर मिला वोटर लिस्ट में नाम जुड़वाने का मौका



दिल्ली: दिल्ली और महाराष्ट्र समेत सात राज्यों में स्पेशल समरी रिवीजन (SIR) से छूटे वोटर्स के लिए राहत की खबर। बीते 8 दिनों में चुनाव आयोग का यह दूसरा अहम कदम।

भारत के चुनाव आयोग (EC) ने एक बार फिर यह साबित किया है कि चुनाव प्रक्रिया में देश के हर एक नागरिक की भागीदारी अहम है।

अगर आप दिल्ली, महाराष्ट्र या अन्य 5 संबंधित राज्यों के निवासी हैं और हाल ही में चले 'स्पेशल समरी रिवीजन' (SIR) अभियान के दौरान अपना नाम वोटर लिस्ट में दर्ज कराने से चूक गए थे, तो आपके लिए एक बड़ी और राहत भरी खबर है। चुनाव आयोग ने ऐसे सभी छूटे हुए मतदाताओं को वोटर लिस्ट में अपना नाम जुड़वाने का एक अतिरिक्त मौका देने का ऐलान किया है।

8 दिन में दूसरा बड़ा फैसला

यह फैसला इसलिए भी बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि महज़ 8 दिनों के भीतर चुनाव आयोग द्वारा लिया गया यह दूसरा बड़ा कदम है। इससे साफ ज़ाहिर होता है कि आयोग मतदाता सूचियों को त्रुटिहीन बनाने और मतदान प्रतिशत को अधिकतम स्तर तक ले जाने के लिए पूरी तरह से मुस्तैद है।

अमूमन SIR प्रक्रिया समाप्त होने के बाद मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन हो जाता है, लेकिन चुनाव आयोग ने ज़मीनी हकीकत और नागरिकों की सुविधा को देखते हुए अपने नियमों में यह लचीलापन दिखाया है।

अब आगे क्या?

विशेषज्ञों का मानना है कि इस फैसले से उन युवाओं और प्रवासियों को सबसे ज्यादा फायदा मिलेगा, जो नौकरी या पढ़ाई के चलते समय पर अपने दस्तावेज़ जमा नहीं कर पाए थे। आयोग का स्पष्ट संदेश है कि कोई भी पात्र मतदाता अपने मताधिकार से वंचित न रहे। ऐसे में जिन नागरिकों का नाम अब तक सूची में नहीं है, उन्हें बिना देरी किए अपने नजदीकी बीएलओ (BLO) से संपर्क करना चाहिए या चुनाव आयोग के ऑनलाइन पोर्टल का इस्तेमाल कर जल्द से जल्द अपना नाम जुड़वा लेना चाहिए।

डिजिटल भारत का नया सवेरा: देशभर में 'स्मार्ट विलेज मिशन' के दूसरे चरण को मंजूरी, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मिलेगा बड़ा बूस्टर



नई दिल्ली:

देश के ग्रामीण इलाकों को तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए केंद्र सरकार ने 'स्मार्ट विलेज मिशन' (Smart Village Mission) के दूसरे चरण को औपचारिक मंजूरी दे दी है। सोमवार को कैबिनेट की उच्च स्तरीय बैठक में इस महत्वाकांक्षी परियोजना के विस्तार पर मुहर लगाई गई।

इस नए चरण के तहत देश की 50,000 से अधिक चिन्हित ग्राम पंचायतों को पूरी तरह से डिजिटल हब में बदला जाएगा। इस योजना का मुख्य उद्देश्य न केवल गांवों तक हाई-स्पीड इंटरनेट पहुंचाना है, बल्कि ग्रामीण युवाओं को स्थानीय स्तर पर ही तकनीकी कौशल (Digital Skills) प्रदान करना है ताकि वे वर्क-फ्रॉम-होम और ई-कॉमर्स जैसे क्षेत्रों से जुड़ सकें।

सरकार ने इसके लिए एक बड़े बजट का प्रावधान किया है, जिसके तहत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सरकारी स्कूलों और कृषि केंद्रों को आधुनिक डिजिटल उपकरणों से लैस किया जाएगा।

किसानों और छोटे उद्यमियों को सीधा लाभ

विशेषज्ञों के अनुसार, इस मिशन से ग्रामीण भारत में कृषि-तकनीक (Agri-Tech) और कुटीर उद्योगों को अभूतपूर्व बढ़ावा मिलेगा।

किसान अब सीधे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से जुड़कर अपनी फसलों का सही दाम तय कर सकेंगे।

वहीं, महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से ऑनलाइन बिजनेस शुरू करने के लिए विशेष प्रशिक्षण और कम ब्याज पर ऋण की सुविधा दी जाएगी। अगले तीन वर्षों के भीतर इस परियोजना को जमीनी स्तर पर पूरी तरह लागू करने का लक्ष्य रखा गया है।

पर्यावरण संरक्षण की ओर बड़े कदम: देश के 20 प्रमुख शहरों में 'ग्रीन कॉरिडोर' परियोजना शुरू, प्रदूषण नियंत्रण के लिए कड़े नियम लागू



नई दिल्ली:

बढ़ते शहरीकरण और पर्यावरण असंतुलन की चुनौतियों से निपटने के लिए राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (NGT) और पर्यावरण मंत्रालय ने संयुक्त रूप से एक महा-अभियान की शुरुआत की है। देश के सबसे अधिक आबादी और प्रदूषण से प्रभावित 20 महानगरों में 'अर्बन ग्रीन कॉरिडोर' (Urban Green Corridor) योजना लागू की जा रही है। इस परियोजना के तहत इन शहरों के प्रमुख औद्योगिक और रिहायशी इलाकों के बीच घने पेड़-पौधों की एक विस्तृत श्रृंखला (Macro Forest Belts) तैयार की जाएगी, जो हवा को शुद्ध करने में प्राकृतिक फिल्टर का काम करेगी।

मंत्रालय द्वारा जारी नई गाइडलाइंस के अनुसार, इन 20 शहरों में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को अगले एक साल के भीतर 80% तक इलेक्ट्रिक या सीएनजी संचालित करने का अनिवार्य लक्ष्य रखा गया है। इसके साथ ही, शहरी निकायों को आदेश दिए गए हैं कि वे हर नए निर्माण कार्य में कम से कम 25% क्षेत्र को 'हरित क्षेत्र' (Green Zone) के रूप में आरक्षित रखें।

जनता की भागीदारी और सख्त जुर्माने का प्रावधान

इस नीति को प्रभावी बनाने के लिए नियमों का उल्लंघन करने वाली निर्माण कंपनियों और भारी धुआं छोड़ने वाले वाहनों पर भारी जुर्माने का प्रावधान किया गया है। पर्यावरणविदों ने सरकार के इस कदम का स्वागत किया है और इसे भविष्य की पीढ़ियों के स्वास्थ्य के लिए एक सुरक्षा कवच बताया है। सरकार इस अभियान में आम नागरिकों और स्कूल-कॉलेज के छात्रों को भी जोड़ने जा रही है, जिसके लिए हर वार्ड स्तर पर 'पर्यावरण मित्र' समितियों का गठन किया जाएगा।

नड्डा का प्रहार: राहुल की राजनीति 'हिट एंड रन' वाली



मुंबई। महाराष्ट्र सरकार ने 28 अक्टूबर 2026 को सरकारी कामकाज और औद्योगिक ईकोसिस्टम को आधुनिक बनाने के लिए 'MahaIN-DUS AI' नामक एक बेहद एडवांस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्लेटफ़ॉर्म लॉन्च किया है।

इस डिजिटल पहल का मुख्य उद्देश्य राज्य के प्रशासनिक विभागों, पारदर्शिता, और व्यापार सुगमता (Ease of Doing Business) को एक नई ऊँचाई पर ले जाना है।

यह प्लेटफ़ॉर्म एकीकृत डेटाबेस (Integrated Databases) के साथ मिलकर काम करेगा, जिससे विभिन्न सरकारी विभागों को कॉर्पोरेट और स्टार्टअप्स की फाइलों को तेज़ी से प्रोसेस करने में मदद मिलेगी। व्यापार जगत के विशेषज्ञों का मानना है कि इस एआई अपग्रेड के बाद उद्योगों को मिलने वाली मंज़ूरियों में लगने वाला समय आधा रह जाएगा।

इसके अलावा, सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के सही लाभार्थियों की पहचान करने और दावों की सत्यता जाँचने में भी यह तकनीक गेम-चेंजर साबित होगी, जिससे राज्य में निवेश का माहौल और बेहतर होगा।

नाटक 'बीरबल' की शानदार प्रस्तुति ने दर्शकों को किया मंत्रमुग्ध



देश दर्पण संवाद,सीधी।

टाटा कॉलेज परिसर स्थित विवेकानंद सभागार में नाटक 'बीरबल' की शानदार मंचीय प्रस्तुति ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इन्द्रवती नाट्य समिति सीधी एवं एक्सट्रीम आर्ट एंड एजुकेशनल सोसायटी सीधी द्वारा संजय गांधी महाविद्यालय के सहयोग से आयोजित इस नाट्य प्रस्तुति में विद्यार्थियों ने अपने शानदार अभिनय, प्रभावशाली संवाद अदायगी और मंचीय अभिव्यक्ति से दर्शकों की खूब तालियां बटोरीं।

कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक संतोष कोरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि अध्यक्षता टाटा कॉलेज के निदेशक आर.बी. सिंह ने की। विशिष्ट अतिथियों के रूप में टाटा कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राघवेन्द्र द्विवेदी, बी.एल. सिंह, सौरभ सिंह एवं अंकुश सिंह उपस्थित रहे। इस अवसर पर आशीष जायसवाल, श्रवण मिश्र, महाविद्यालय के प्राध्यापक, स्टॉफ सदस्य एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

बीरबल की बुद्धिमत्ता और हास्यबोध का जीवंत मंचन

नाटक 'बीरबल' में बीरबल की बुद्धिमत्ता, तर्कशक्ति, सूझबूझ एवं हास्यबोध को रोचक नाटकीय शैली में प्रस्तुत किया गया। विद्यार्थियों ने अपने पात्रों के अनुरूप अभिनय, प्रभावशाली संवादों, भाव-भंगिमाओं और मंचीय उपस्थिति से कथानक को जीवंत बना दिया। वेशभूषा, संगीत एवं प्रकाश संयोजन ने प्रस्तुति को और अधिक आकर्षक बनाया।

दर्शकों ने विद्यार्थियों के अभिनय और सामूहिक प्रयासों की सराहना की। नाटक में अनुराधा सिंह, वर्षा शुक्ला, प्रांजली शर्मा, प्रतिमा साकेत, शिक्षा चतुर्वेदी, आकांक्षा चतुर्वेदी, विद्याकांत चतुर्वेदी, शुभम रजक, सुमित केवट, साक्षी उपाध्याय, पुष्पेन्द्र गुप्ता, आकाश वर्मा, अमन द्विवेदी, प्रिया सिंह गहरवार, सुहानी कुशवाहा, रोहित कुमार पाण्डेय, रोशनी विश्वकर्मा, रोहिणी प्रजापति, रोशनी गुप्ता, ओमकार पाण्डेय, प्रीती सिंह एवं सचिन वर्मा ने अभिनय किया।

अतिथियों ने की सराहना, प्रतिभागियों को मिले प्रमाण पत्र

नाट्य प्रस्तुति के उपरांत मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक संतोष कोरी एवं कार्यक्रम अध्यक्ष आर.बी. सिंह ने विद्यार्थियों के अभिनय और रचनात्मक प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि रंगमंच विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास, संवाद क्षमता एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति को निखारने का सशक्त माध्यम है। इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों को अतिथियों द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

रचनात्मक एवं तकनीकी टीम का रहा महत्वपूर्ण योगदान

नाटक में वस्त्र विन्यास एवं संगीत सहयोग प्रजीत कुमार साकेत, ढोलक वादन देवेन्द्र तिवारी, प्रकाश परिकल्पना रजनीश कुमार जायसवाल तथा रूप सज्जा दीपिका सिंह बघेल ने संभाली। कार्यशाला की परिकल्पना नीरज कुंदेर ने की, जबकि नाटक का आलेख, संगीत परिकल्पना एवं निर्देशन रोशनी प्रसाद मिश्र ने किया।

कार्यक्रम को जिला कलेक्टर विकास मिश्र एवं संजय गांधी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रभाकर सिंह का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कार्यशाला का संयोजन डॉ. राजकुमार सिंह सोर्तिया ने किया।

आयोजन समिति की ओर से नीरज कुंदेर, प्रवीण सिंह, रोशनी प्रसाद मिश्र, रजनीश कुमार जायसवाल, प्रजीत कुमार साकेत, हिमांशु मिश्र एवं देवेन्द्र तिवारी सहित अनेक कलाकार एवं सहयोगी उपस्थित रहे।



अग्निपथ अब हुआ 'पक्कापथ': अग्निवीरों को 4 साल बाद बाहर होने से मिली राहत, 6 साल बाद मिलेगा स्थायी होने का मौका



नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने सेना में भर्ती के लिए 2022 में शुरू की गई 'अग्निपथ योजना' को लेकर एक बड़ा और ऐतिहासिक फैसला लिया है। अब चार साल की सेवा पूरी करने वाले 75% अग्निवीरों को सेना से बाहर करने के प्रावधान में बदलाव कर दिया गया है।

चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल एनएस राजा सुब्रमणि ने घोषणा की है कि 4 साल बाद 25% अग्निवीर पहले की तरह ही नियमित किए जाएंगे, जबकि शेष 75% अग्निवीरों को अब दो साल की अतिरिक्त सेवा का मौका दिया जाएगा।

छह साल की कुल सेवा पूरी होने के बाद इन इच्छुक जवानों को भी योग्यता और तय मानदंडों के आधार पर नियमित/स्थायी सैनिक बनने का अवसर मिलेगा।

यह अहम फैसला प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में कैबिनेट द्वारा मंजूर किया गया है। यह बदलाव ऐसे महत्वपूर्ण समय में किया गया है जब पहले बैच के 18,300 अग्निवीर 31 दिसंबर को अपनी 4 साल की सेवा पूरी कर बाहर होने वाले थे।

इस नई व्यवस्था के तहत, अतिरिक्त दो वर्षों (पांचवें और छठे साल) में अग्निवीरों का मासिक वेतन बढ़ाकर क्रमशः 43,500 रुपये और 47,500 रुपये कर दिया गया है।

इसके साथ ही, उनकी 'सेवा निधि' में सरकारी अंशदान भी बढ़ाया जाएगा। जो अग्निवीर 6 साल बाद नियमित होंगे, उन्हें बाकी सैनिकों की तरह पेंशन और अन्य सभी लाभ भी प्राप्त होंगे। सेना में नई भर्ती प्रक्रिया पहले की तरह ही जारी रहेगी।



असित पाठक
(प्रधान संपादक, देश दर्पण संवाद)

हिंदू धर्म में दीपावली केवल दीप जलाने और खुशियां मनाने का त्योहार नहीं है, बल्कि यह प्रकाश, ज्ञान, धर्म, समृद्धि, आत्मशुद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का महापर्व है। यह पर्व हमें अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर और निराशा से आशा की ओर ले जाता है।

लोकप्रिय हिंदू मान्यता के अनुसार, भगवान श्रीराम 14 वर्ष का वनवास पूरा करके तथा रावण पर विजय प्राप्त करने के बाद माता सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर पूरी नगरी को प्रकाशमय कर दिया था। इसी प्रसंग को दीपावली के प्रमुख धार्मिक आधारों में माना जाता है।

दीपावली की अमावस्या की रात्रि को माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है। माता लक्ष्मी धन, ऐश्वर्य, वैभव और समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। भगवान गणेश बुद्धि, विवेक, शुभारंभ और विघ्नों के निवारण के प्रतीक हैं।

इस पूजा का गहरा संदेश यह भी है कि धन के साथ विवेक, सद्बुद्धि और नैतिकता का होना आवश्यक है। समृद्धि का वास्तविक अर्थ केवल धन-संपत्ति नहीं, बल्कि परिवार में सुख, स्वास्थ्य, शांति और संतोष भी है।

लेकिन मेरा मानना है कि त्योहार मनाना केवल धार्मिक परंपरा या सामाजिक उत्सव नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन की शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक ऊर्जा को पुनर्जीवित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

हमारी रोजमर्रा की जिंदगी अक्सर एक निश्चित दिनचर्या में बंध जाती है—काम, जिम्मेदारियां, तनाव, आर्थिक चिंताएं और समय की कमी। ऐसे में त्योहार जीवन में एक नया उत्साह, नवीनता और सकारात्मकता लेकर आते हैं। किसी भी त्यौहार को पूरे तन मन धन से मनाने से हमारे जीवन में निम्न सकारात्मक परिवर्तन आते हैं।

• त्योहार रोजमर्रा के तनाव और एकरसता से अस्थायी विराम देते हैं।
• उत्सव की तैयारी और उसमें भागीदारी मन में प्रसन्नता और उत्सुकता पैदा करती है।
• संगीत, नृत्य, रंग, सजावट और सांस्कृतिक गतिविधियां मन को आनंदित करती हैं।
• त्योहार हमें जीवन की छोटी-छोटी खुशियों का आनंद लेना सिखाते हैं।
• सामूहिक उत्सव अकेलेपन की भावना कम करने और अपनापन बढ़ाने में सहायक होते हैं।
• परिवार और मित्रों के साथ समय बिताने से मानसिक विश्राम मिलता है।
• पुराने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने का अवसर मिलता है।
• नई पीढ़ी अपनी संस्कृति और परंपराओं से परिचित होती है।
• समाज में सहयोग, सद्भाव और सामूहिकता की भावना विकसित होती है।
• आपसी मतभेदों को भुलाकर संबंधों को पुनर्जीवित करने का अवसर मिलता है।
• लोग अपनी रचनात्मकता को सजावट, कला, संगीत और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से व्यक्त करते हैं।
• आने वाले समय के लिए नई उम्मीदें और संकल्प पैदा होते हैं।

अतः दीपावली पर्व सिर्फ धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ही एक बड़ा पर्व नहीं है , यह आपसी सौहार्द , सामाजिकता, मेल मिलाप, उत्साह, ऊर्जा व सकारात्मक परिवर्तन लाने का एक बहुत बड़ा समय व महापर्व भी है।

मेरी अपेक्षा है कि सभी से इसे पूर्ण आनंद ,उत्साह व ऊर्जा के साथ मनाएं। आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं ।



रविशंकर तिवारी

भीष्म पंचक में करें कार्तिक माह की समस्त उपासना मिलेगा संपूर्ण माह के पुण्य का लाभ

भीष्म पंचक (जिसे विष्णु पंचक या 'पंच भीखू' भी कहा जाता है) कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी (देवउठनी एकादशी) से लेकर कार्तिक पूर्णिमा तक के अंतिम 5 दिनों की एक अत्यंत पवित्र अवधि है। हिंदू धर्म ग्रंथों में इन पांच दिनों को आध्यात्मिक शुद्धि, तपस्या और साधना के लिए सर्वोत्तम माना गया है।

यह सामान्य ज्योतिषीय 'पंचक' (जिसे अशुभ माना जाता है) से बिल्कुल अलग है। भीष्म पंचक पूरी तरह शुभ और पुण्यदायी होता है।

भीष्म पंचक की पौराणिक कथा

महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद जब भीष्म पितामह तीरों की शय्या (शरशय्या) पर लेटे हुए सूर्य के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा कर रहे थे, तब भगवान श्रीकृष्ण पांचों पांडवों को उनके पास ले गए। युधिष्ठिर के अनुरोध पर भीष्म पितामह ने उन्हें लगातार 5 दिनों तक राजधर्म, वर्णधर्म और मोक्षधर्म का गूढ़ ज्ञान व उपदेश दिया। पितामह के ज्ञान और भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान श्रीकृष्ण ने कहा: "हे गंगापुत्र! आपने कार्तिक एकादशी से पूर्णिमा तक के इन 5 दिनों में जो धर्मोपदेश दिया है, उससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।

मैं आपके नाम पर इसे 'भीष्म पंचक' महाव्रत के रूप में स्थापित करता हूँ। जो व्यक्ति इन पांच दिनों में व्रत व साधना करेगा, उसे पूरे कार्तिक मास की पूजा का फल प्राप्त होगा।"

इसका धार्मिक महत्व और लाभ

• संपूर्ण कार्तिक मास का फल: जो लोग किसी कारणवश पूरे कार्तिक महीने के नियम-व्रत नहीं रख पाते, वे यदि केवल इन 5 दिनों में श्रद्धापूर्वक व्रत व नियमों का पालन कर लें, तो उन्हें पूरे महीने का पुण्य मिल जाता है।
• मोक्ष और सुख-समृद्धि की प्राप्ति: शास्त्रों के अनुसार यह व्रत जीवन के चारों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) की सिद्धि करने वाला तथा दरिद्रता का नाश करने वाला है।

प्रमुख कार्य और उपाय

• प्रातः स्नान और जप: ब्रह्म मुहूर्त (सुबह 4 से 5 बजे के बीच) में उठकर किसी पवित्र नदी या घर पर ही गंगाजल मिले जल से स्नान करें। स्नान करते समय 'ॐ'कार का जप करना बहुत शुभ माना जाता है।
• दीपदान: तुलसी के पौधे, मंदिर, नदी या तालाब के पास नियमित रूप से देसी घी का दीपक जलाएं। भीष्म पंचक के दौरान एकादशी से पूर्णिमा तक रोजाना दीपों की संख्या बढ़ाएं — जैसे एकादशी पर 11, द्वादशी पर 12, त्रयोदशी पर 13, चतुर्दशी पर 14 और पूर्णिमा के दिन 15 या उससे अधिक दीये जलाएं।
• भगवान विष्णु और शालिग्राम की उपासना: इन अंतिम दिनों में नित्य शालिग्राम भगवान और भगवान विष्णु का वंदन-पूजन करें। भीष्म स्तुति, गजेंद्र मोक्ष, गोपाल सहस्रनाम या तुलसी स्तोत्र का पाठ करें।
• तुलसी, आंवला और बेलपत्र की पूजा: तुलसी, आंवला और बेलपत्र के वृक्ष की पूजा करें और वहां दीपदान करें।
• अन्न और तिल का दान: कार्तिक के अंतिम दिनों में (विशेषकर अंतिम 1-2 दिन या पूर्णिमा पर) तिल, अन्न, वस्त्र या भूमि का दान करना अत्यंत पुण्यदायी होता है।
• गौ सेवा: गाय को प्रतिदिन हरा चारा खिलाएं या गौशाला में सेवा पहुंचाएं।
• संयमित जीवन (भूमि पर शयन): मन को वश में रखने के लिए इन दिनों में जमीन पर सोना (भूमि शयन) और एक समय सात्विक भोजन करने का नियम अपनाएं।



महर्षि पतंजलि कृत 'योग दर्शन' (भाग-२): समाधि पाद और यम-नियम से आत्म-स्वरूप की पहचान

प्रकाश त्रिपाठी
(वरिष्ठ कार्यकारी संपादक, देश दर्पण संवाद)

'देश दर्पण संवाद' के पिछले अंक में हमने महर्षि पतंजलि के 'योग दर्शन' की एक सामान्य रूपरेखा और आत्मकल्याण के इस प्रत्यक्ष मार्ग पर चर्चा की थी। "हम खबर नहीं आईना दिखाते हैं" के अपने संकल्प के साथ, हमारा यह प्रयास है कि हम समाज को केवल बाहरी ही नहीं, बल्कि आंतरिक यथार्थ से भी परिचित कराएं। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए, आज हम योग दर्शन के प्रथम अध्याय 'समाधि पाद' के मूल रहस्यों और अष्टांग योग के आधारभूत अंगों—यम और नियम—पर सरल भाषा में चर्चा करेंगे।

महर्षि पतंजलि अपने महान ग्रंथ की शुरुआत अत्यंत सहजता से करते हैं— "अथ योगानुशासनम्" अर्थात, अब परम्परागत योगविषयक शास्त्र आरम्भ करते हैं। यहाँ 'अनुशासन' शब्द यह स्पष्ट करता है कि योग मात्र एक शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक अनुशासित कला है।

इसके तुरंत बाद वे योग की सबसे सटीक और वैज्ञानिक परिभाषा देते हैं:

"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः"

जिसका अर्थ है, चित्त (मन) की वृत्तियों का निरोध या सर्वथा रुक जाना ही योग है। आज के समय में हमारा मन अनगिनत विचारों, चिंताओं और इच्छाओं में भटकता रहता है। इन्हीं मानसिक उलझनों को पूरी तरह शांत करना ही योग का प्रथम लक्ष्य है।

जब चित्त की ये वृत्तियाँ शांत हो जाती हैं, तब क्या होता है? इसका उत्तर महर्षि अगले सूत्र "तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्" में देते हैं। अर्थात, उस समय द्रष्टा (आत्मा) की अपने वास्तविक स्वरूप में स्थिति हो जाती है। इसी अवस्था को वास्तव में 'कैवल्य-अवस्था' (मोक्ष) प्राप्त होना कहा जाता है। परंतु, जब तक हम योग-साधनों के द्वारा चित्त को शांत नहीं करते, तब तक हम अपनी मानसिक वृत्तियों के अनुरूप ही अपना स्वरूप समझते रहते हैं ("वृत्तिसारूप्यमितरत्र")।

शास्त्र के अनुसार मन की ये वृत्तियाँ मुख्य रूप से पाँच प्रकार की होती हैं, जिनमें कुछ 'क्लिष्ट' (अविद्या आदि क्लेश देने वाली) और कुछ 'अक्लिष्ट' (योग साधन में सहायक) होती हैं। एक साधक को चाहिए कि वह पहले अक्लिष्ट वृत्तियों की सहायता से क्लिष्ट वृत्तियों को हटाए और फिर मन को पूर्णतः शांत करे। अब सबसे बड़ा प्रश्न यह उठता है कि चित्त की इन चंचल वृत्तियों को कैसे रोका जाए? यहीं से अष्टांग योग के प्रथम दो सोपान—'यम' और 'नियम' की व्यावहारिक भूमिका आरंभ होती है। यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) हमें बाहरी दुनिया और समाज के साथ संतुलन बनाना सिखाते हैं। आज के तनाव और द्वेष भरे दौर में यम का पालन एक स्वस्थ समाज की नींव रखता है।

वहीं, नियम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्राणिधान) हमारे आंतरिक जीवन और विचारों को शुद्ध करने का मार्ग हैं। यम और नियम के अनुशासन के बिना चित्त की वृत्तियों को नियंत्रित करना असंभव है। ये दोनों ही योग रूपी भवन की वह मजबूत नींव हैं, जिस पर आगे चलकर ध्यान और समाधि का भव्य महल खड़ा होता है।

'देश दर्पण संवाद' के संपादकीय पृष्ठ के माध्यम से मेरा यह निरंतर प्रयास रहेगा कि योग दर्शन के इस गूढ़ विज्ञान को अत्यंत आसान भाषा में आप तक पहुँचाता रहूँ। समाधि पाद के इस ज्ञान को अपने जीवन में उतारकर ही हम यथार्थ स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं। अगले अंक में हम योग के अन्य अंगों और उनके वैज्ञानिक लाभों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही: आधुनिक जीवनशैली की सबसे बड़ी चुनौती



डॉ. हर्ष मिश्रा,
BAMS (MPMSU) |
MBA (Hospital Administration)

आज के दौर में मनुष्य ने विज्ञान, तकनीक और सुविधाओं के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है, लेकिन इस प्रगति के बीच उसका स्वास्थ्य पीछे छूटता जा रहा है।

अनियमित दिनचर्या, असंतुलित खानपान, शारीरिक श्रम की कमी, तनाव और अपर्याप्त नींद अनेक स्वास्थ्य समस्याओं के प्रमुख कारण बन रहे हैं। मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और हृदय रोग जैसी गैर-संचारी बीमारियाँ अब केवल बुजुर्गों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि युवाओं में भी तेजी से देखी जा रही हैं।

चिंताजनक बात यह है कि अधिकांश लोग बीमारी के शुरुआती लक्षणों को नजरअंदाज करते हैं और समस्या गंभीर होने पर ही चिकित्सकीय सहायता लेते हैं। स्वास्थ्य केवल बीमारी न होने का नाम नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की अवस्था है।

इसके लिए संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद, स्वच्छता और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना आवश्यक है।

इस दिशा में परिवार, विद्यालय, समाज और सरकार सभी की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालयों में स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा देना, सार्वजनिक स्थानों पर व्यायाम की सुविधाएँ विकसित करना तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाना समय की आवश्यकता है।

आयुर्वेद में भी स्वस्थ जीवन के लिए दिनचर्या, ऋतुचर्या, संतुलित आहार और संयमित व्यवहार को विशेष महत्व दिया गया है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और पारंपरिक स्वास्थ्य ज्ञान का वैज्ञानिक एवं प्रमाण-आधारित समन्वय जनस्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक हो सकता है।

अंततः स्वास्थ्य पर किया गया निवेश खर्च नहीं, बल्कि बेहतर भविष्य की पूंजी है। स्वस्थ नागरिक ही स्वस्थ समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

GeM के 10 साल : युवा भारत के लिए सरकारी कारोबार की 10 सीख

● प्रदीप सैनी

अवसर से ऑर्डर तक, और ऑर्डर से भुगतान तक—हर सप्ताह एक कम-जाना नियम
भाग – 9

दस साल में बदल गया सरकारी बाजार... अब किस क्षेत्र में छिपे हैं बड़े अवसर? AI, स्मार्ट उपकरण, सौर ऊर्जा और नई तकनीक से जुड़े उत्पाद—जानिए GeM पर अपने कारोबार की संभावनाएं तलाशने का अनजाना तरीका

प्रदीप सैनी

एक युवा ने ऐसा उपकरण बनाया जो पानी की गुणवत्ता जांच सकता है। दूसरे ने विद्यालयों के लिए स्मार्ट शिक्षण प्रणाली तैयार की। तीसरे ने बिजली बचाने वाला सौर उपकरण विकसित किया। तीनों के मन में एक ही सवाल था—

"हमारा उत्पाद अच्छा है, लेकिन क्या इसकी जरूरत किसी सरकारी विभाग को भी है?" दिलचस्प बात यह है कि इस सवाल का जवाब केवल अनुमान लगाने से नहीं, बल्कि GeM पर सरकारी खरीद की वास्तविक मांग का अध्ययन करके भी खोजा जा सकता है। 86 से 10 हजार से अधिक श्रेणियां—दस वर्षों में कितना बदला बाजार! दिसंबर 2016 में GeM पर केवल 86 उत्पाद श्रेणियां और लगभग चार हजार उत्पाद उपलब्ध थे। अगस्त 2026 तक यह दायरा बढ़कर 10,660 से अधिक उत्पाद और 350 सेवा श्रेणियों तक पहुंच चुका था। लेकिन यह केवल संख्याओं का विस्तार नहीं है। सरकारी खरीद में अब पारंपरिक सामान के साथ आधुनिक तकनीक, ऊर्जा संरक्षण, डिजिटल शिक्षा, निगरानी और स्वचालन जैसी आवश्यकताएं भी सामने आ रही हैं। यानी आज का नया उत्पाद, आने वाले समय में किसी सरकारी विभाग की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन सकता है। किन नई तकनीकों में अवसर तलाशें?

स्मार्ट शिक्षा: डिजिटल शिक्षण उपकरण, इंटरैक्टिव स्क्रीन, स्मार्ट कक्षा, ऑनलाइन प्रयोगशाला और विद्यालयों की तकनीकी व्यवस्था।

सौर ऊर्जा और पर्यावरण: सौर स्ट्रीट लाइट, ऊर्जा बचाने वाले उपकरण, जल शुद्धिकरण, वायु एवं जल गुणवत्ता की निगरानी और स्वच्छता समाधान। **AI और रोबोटिक्स:** आंकड़ों का विश्लेषण, स्वचालित निगरानी, मशीनों की स्थिति जांचने वाले उपकरण और जोखिम वाले कामों के लिए रोबोटिक समाधान।

डिजिटल सुरक्षा: साइबर सुरक्षा, नेटवर्क निगरानी, डेटा प्रबंधन, सॉफ्टवेयर विकास और सरकारी डिजिटल प्रणालियों का रखरखाव।

ड्रोन और space-tech: भूमि सर्वेक्षण, डिजिटल मानचित्र, उपग्रह चित्रों का विश्लेषण, कृषि निगरानी और तकनीकी निरीक्षण। ये केवल कल्पनाएं नहीं हैं। वर्ष 2026 की वास्तविक सरकारी BID में सौर स्ट्रीट लाइट, स्मार्ट कक्षा की स्थापना, साइबर सुरक्षा और ड्रोन आधारित सर्वेक्षण जैसी आवश्यकताएं सामने आई हैं। सबसे रोचक बात—आपकी तकनीक की मांग किसी दूसरे नाम से भी हो सकती है! मान लीजिए आपने स्मार्ट कक्षा के लिए एक उपकरण बनाया है। आप GeM पर उसका नाम खोजते हैं, लेकिन कोई BID दिखाई नहीं देती। क्या इसका मतलब है कि सरकारी बाजार में उसकी मांग ही नहीं?

जरूरी नहीं! सरकारी खरीदार उसी आवश्यकता को डिजिटल शिक्षण उपकरण, इंटरैक्टिव डिस्प्ले, स्मार्ट कक्षा स्थापना या दृश्य-श्रव्य शिक्षण प्रणाली जैसे अलग-अलग नामों से व्यक्त कर सकता है। इसी तरह पानी की गुणवत्ता जांचने वाला उपकरण कभी निगरानी प्रणाली तो कभी परीक्षण सेवा के रूप में मांगा जा सकता है

इसलिए केवल अपने उत्पाद का नाम मत खोजिए—उस समस्या का नाम भी खोजिए जिसे आपका उत्पाद हल करता है। पिछली दस BID बता सकती हैं बाजार की दिशा! यह एक ऐसा व्यावहारिक तरीका है जिसे नए उद्यमी अक्सर अपनाते ही नहीं। अपने उत्पाद से संबंधित पिछली दस सरकारी BID खोजिए और जांचिए कि किन विभागों ने खरीद की मांग रखी, कितनी मात्रा चाहिए थी, कौन-से तकनीकी मानक मांगे गए और आपूर्ति कहां करनी थी।

फिर जहां जानकारी उपलब्ध हो, वहां प्रदान किए गए ऑर्डर और पिछली खरीद के परिणाम भी देखिए। मान लीजिए अलग-अलग जिलों में कई विभाग समान प्रकार की जल गुणवत्ता निगरानी प्रणाली मांग रहे हैं। यह संकेत हो सकता है कि उस तकनीक की उपयोगिता केवल एक ग्राहक तक सीमित नहीं है।

हालांकि BID प्रकाशित होना और ऑर्डर मिलना अलग बातें हैं। इसलिए खरीद के अंतिम परिणाम की जांच भी जरूरी है। एक और अनजाना पहलू—उत्पाद नहीं, सेवा की मांग भी खोजिए! कई युवा अपने उपकरण को बेचने की संभावना तो देखते हैं, लेकिन उससे मिलने वाली सेवा को भूल जाते हैं। उदाहरण के लिए ड्रोन बनाने वाला युवा ड्रोन बेचने के साथ सर्वेक्षण सेवा की संभावना भी देख सकता है। AI विकसित करने वाला युवा तैयार सॉफ्टवेयर के अलावा डेटा विश्लेषण या स्वचालन सेवा की मांग खोज सकता है। यानी एक तकनीक के लिए सरकारी बाजार में उत्पाद और सेवा—दोनों अलग अवसर हो सकते हैं।

अपने उत्पाद की संभावनाएं कैसे तलाशें? सबसे पहले GeM की सार्वजनिक BID सूची खोलकर उत्पाद के अलग-अलग नाम और उसके उपयोग से जुड़े शब्द खोजिए। फिर सामान्य उत्पाद BID के साथ सेवा, विशेष आवश्यकता और मात्रा-सूची आधारित खरीद के दस्तावेज भी देखिए। इसके बाद तीन बातें मिलाइए—मांग कितनी बार सामने आई, खरीदार किस तकनीकी मानक की अपेक्षा कर रहा है और आपका उत्पाद उसे कितना पूरा करता है।

यदि उपयुक्त श्रेणी नहीं मिलती, तो पात्र Startup को नवाचार संबंधी उपलब्ध व्यवस्थाओं और श्रेणी संबंधी अनुरोध की प्रक्रिया की जानकारी भी लेनी चाहिए। युवा भारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण सीख दस वर्षों में GeM ने सरकारी बाजार का दायरा बढ़ाया है। अब नया उद्यमी केवल उत्पाद बनाकर ग्राहक का इंतजार करने तक सीमित नहीं है। वह सरकारी खरीद की प्रकाशित आवश्यकताओं का अध्ययन करके यह समझ सकता है कि किन समस्याओं के लिए नए समाधान की जरूरत सामने आ रही है। "पहले उत्पाद बनाकर ग्राहक खोजा जाता था; अब सरकारी मांग समझकर उपयोगी उत्पाद विकसित करने का रास्ता भी खुला है।" क्योंकि भविष्य का सफल युवा उद्यमी केवल यह नहीं पूछेगा कि "मैं क्या बेच सकता हूं?"

वह यह भी पूछेगा— "सरकार को किस समस्या का समाधान चाहिए, और क्या मेरी तकनीक वह समाधान दे सकती है?"

अगली और अंतिम कड़ी — भाग 10

सरकारी बाजार अब सबकी पहुंच में... दस साल में कितना आसान हुआ कारोबार? दफ्तरों के अनावश्यक चक्करों से डिजिटल खरीद तक, भुगतान की ऑनलाइन जानकारी से वित्तीय सहायता तक—GeM के दस वर्षों की दस सीख और युवा भारत के नाम विशेष समापन।

750 करोड़ का प्रबंधन, 'शून्य' का संघर्ष और 10 लाख दिलों पर राज: डिजिटल जगत के आइकॉन प्रभात पोद्दार की अविश्वसनीय दास्तान

● प्रकाश त्रिपाठी

भोपाल: सफलता की कहानी वह नहीं होती जहाँ सब कुछ आसान हो, असली कहानी वह है जहाँ इंसान सब कुछ हारने के बाद भी दोबारा मजबूती से खड़ा हो जाए।

'देश दर्पण संवाद' के विशेष पृष्ठ 'अतिथि देवो भवः' पर आज हमारे मेहमान हैं— प्रभात पोद्दार। एक ऐसा जुझारू व्यक्तित्व, जिन्होंने सात वर्ष तीन महीने तक भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) में क्रेडिट मैनेजर के रूप में 750 करोड़ रुपये के विशाल पोर्टफोलियो का सफलतापूर्वक प्रबंधन किया।

लेकिन अपनी रचनात्मक महत्वाकांक्षा के चलते 2014 के अंत में उन्होंने बैंकिंग की सुरक्षित नौकरी छोड़ दी। उन्होंने शेयर बाजार में फुल-टाइम ट्रेडिंग शुरू की, जहाँ एक कड़े झटके में उन्होंने अपनी सारी जमा-पूंजी गंवा दी।

यह वह दौर था जो किसी को भी मानसिक रूप से तोड़ सकता था, लेकिन प्रभात जी के लिए यह अंत नहीं, बल्कि एक नए अध्याय की शुरुआत थी।

असफलता से शिक्षा और सृजन की ओर

इस बड़े आर्थिक और मानसिक झटके ने उन्हें जीवन की एक नई दिशा दी। 2016 में उन्होंने 'महिंद्रा एजुकेशन' में अर्थशास्त्र और समसामयिक विषयों (करंट अफेयर्स) के अध्यापन से एक नई शुरुआत की। जीवन के इन्हीं कड़वे-मीठे अनुभवों ने उनके भीतर के लेखक को जगाया और 2019 में उनकी पहली स्व-प्रकाशित पुस्तक 'नॉट अ लॉन्ग स्टोरी' (Not a Long Story) सामने आई।

महामारी में तलाशे नए अवसर और सिनेमाई रचनात्मकता

कोरोना महामारी के कठिन दौर को प्रभात जी ने एक बड़े अवसर में बदला। उन्होंने यूट्यूब की दुनिया में कदम रखा। इसी बीच एक कोचिंग सेंटर भी शुरू किया, जो भले ही बाद में बंद हो गया, लेकिन उन्हें अमूल्य अनुभव दे गया। इसी दौरान उन्होंने शुभम पांडेय के साथ मिलकर यूट्यूब के लिए 30 से अधिक लघु फिल्मों (शॉर्ट फिल्म्स) का निर्माण किया, जिसने उनके दृष्टिकोण को एक नया सिनेमाई और रचनात्मक फलक दिया।

दस लाख का डिजिटल परिवार और वर्तमान

2022 में उन्होंने इंस्टाग्राम पर 'प्रभात डॉट भोपाल' (prabhat.bhopal) नाम से सकारात्मकता और रचनात्मकता पर आधारित पेज की नींव रखी। आज उनका यह डिजिटल सफर 10 अलग-अलग डोमेन के पेजों और दस लाख (एक मिलियन) से अधिक फॉलोअर्स के विशाल परिवार में बदल चुका है।

हाल ही में, वर्ष 2026 में प्रतिष्ठित 'मंजुल पब्लिकेशन' से उनकी दूसरी पुस्तक 'नेवर अ लॉन्ग स्टोरी' (Never a Long Story) प्रकाशित हुई है। वर्तमान में प्रभात पोद्दार प्रतिष्ठित आईपीईआर (IPER) एमबीए कॉलेज में अतिथि संकाय (गेस्ट फैकल्टी) के रूप में युवाओं को मार्केटिंग और अन्य विषयों के गुर सिखा रहे हैं, साथ ही निरंतर विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन भी कर रहे हैं। उनका सफर साबित करता है कि अटूट हौसले से तकदीर की इबारत फिर से लिखी जा सकती है।



इन्हीं सब विषयों और जीवन के इस उतार-चढ़ाव भरे प्रेरक सफर को लेकर 'देश दर्पण संवाद' के कार्यकारी संपादक प्रकाश त्रिपाठी ने प्रभात पोद्दार जी से खास बातचीत की। प्रस्तुत हैं इस बातचीत के मुख्य अंश:

प्रश्न 1: स्टेट बैंक में 750 करोड़ का पोर्टफोलियो संभालने वाले अधिकारी का शेयर बाजार में सब कुछ हार जाना, एक भयंकर मानसिक आघात रहा होगा। उस 'शून्य' के दौर में आपने खुद को बिखरने से कैसे बचाया?

उत्तर: वह मेरे लिए एक बेहद कठिन दौर था। कुछ समय के लिए मेरी मानसिक स्थिति बहुत खराब हो गई थी और मेरा खुद पर से आत्मविश्वास पूरी तरह से टूट चुका था। हालांकि, जब मैंने पढ़ाना शुरू किया, तो धीरे-धीरे मेरा खोया हुआ आत्मविश्वास वापस लौटने लगा। शिक्षण ने मुझे खुद को दोबारा समेटने की ताकत दी।

प्रश्न 2: बैंकिंग की दुनिया से सीधे शिक्षा (अर्थशास्त्र और करंट अफेयर्स) की ओर मुड़ना क्या महज़ एक संयोग था, या उस असफलता ने आपको जीवन का अर्थशास्त्र नए सिरे से समझाया था?

उत्तर: शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र था जिसे मैं हमेशा से खोजना (explore) चाहता था। शुरुआत में मैंने कुछ एमबीए कॉलेजों में आवेदन किया, लेकिन वहाँ से कोई खास प्रतिक्रिया नहीं मिली। फिर मुझे एक कोचिंग संस्थान में पढ़ाने का अवसर मिला, जिसे मैंने तुरंत स्वीकार कर लिया। मेरे लिए यह एक बहुत ही संतोषजनक और आत्मिक पूर्णता (fulfilling) का अनुभव रहा।

प्रश्न 3: आपकी पहली पुस्तक 'नॉट अ लॉन्ग स्टोरी' (2019) से लेकर 'नेवर अ लॉन्ग स्टोरी' (2026) तक के सात वर्षों के सफर में, एक लेखक के रूप में आपके विचारों में कितनी परिपक्वता आई है?

उत्तर: मुझे लगता है कि अपनी इन दो किताबों के सफर के बीच मैंने एक लेखक के रूप में खुद को काफी विकसित किया है। मैंने जिस भावनात्मक यात्रा का सामना किया है, उसने मेरे दुनिया को देखने के नजरिए को गहराई से प्रभावित किया है। अब यही बदलाव मेरी लेखनी में भी झलकता है; मेरी कहानियों के पात्रों में अब पहले से कहीं अधिक भावनात्मक गहराई होती है।

प्रश्न 4: एक कोचिंग सेंटर का बंद होना और फिर डिजिटल दुनिया (यूट्यूब और इंस्टाग्राम) में 10 लाख से अधिक की ऑडियंस तैयार कर लेना— इस शानदार वापसी का आपका अचूक मंत्र क्या है?

उत्तर: यह सब काफी हद तक जीवन के स्वाभाविक बहाव का एक हिस्सा था। मैं लगातार नई-नई चीजें आजमाता रहा; कुछ में सफलता मिली, तो कुछ में नहीं। मेरा मानना है कि इंसान के हाथ में सिर्फ एक ही चीज होती है— लगातार प्रयोग करते रहना और प्रयास न छोड़ना। बस प्रयोग करते रहिए, कोशिश करते रहिए, कुछ न कुछ बेहतर जरूर होगा।

प्रश्न 5: आपने 30 से अधिक लघु फिल्मों का निर्माण किया। क्या कैमरे के पीछे की उसी रचनात्मकता और विजन ने आपको 'प्रभात डॉट भोपाल' जैसे सफल पेज को स्थापित करने की दृष्टि दी?

उत्तर: मुझे लगता है कि ये दोनों ही अनुभव बिल्कुल अलग थे। मैं हमेशा से फिल्में बनाना चाहता था, इसलिए जब मुझे शुभम के साथ शॉर्ट फिल्म्स बनाने का मौका मिला, तो मैंने उसे तुरंत लपक लिया। हालांकि, मुझे लगता है कि इंस्टाग्राम पर मेरी सफलता छात्रों को पढ़ाने के अनुभव से अधिक प्रेरित है। शिक्षण के दौरान ही मैंने यह समझा कि अपनी बात को बेहद कम शब्दों और प्रभावी (compact) तरीके से लोगों तक कैसे पहुँचाया जा सकता है।

प्रश्न 6: आज का युवा बहुत जल्दी निराश हो जाता है। जो युवा अपना 'पैशन' फॉलो करना चाहते हैं, लेकिन सुरक्षित भविष्य छोड़कर जोखिम लेने से डरते हैं, एक 'मार्केटिंग गुरु' और 'कंटेंट क्रिएटर' के नाते आप उन्हें क्या स्पष्ट संदेश देंगे?

उत्तर: आप जीवन से किसी विज्ञान के प्रयोग (science experiment) जैसी उम्मीद नहीं कर सकते, जहाँ एक निश्चित इनपुट देने पर हमेशा एक निश्चित आउटपुट ही मिले। जीवन ऐसे नहीं चलता। हालांकि, आप जो भी सीखते हैं और जो भी काम करते हैं, वह आपके भीतर कुछ नया सृजित करता है। बस अपना काम करते रहें, सीखते रहें, और अंततः चीजें आपके पक्ष में काम करने लगेंगी।

महात्मा गांधी का चश्मा और 10 हज़ार डाक टिकटों का अनूठा संसार: इतिहास को जीवंत कर रहे हैं ,इंदौर के आलोक खादीवाला



● प्रकाश त्रिपाठी

भोपाल: डाक टिकट केवल पत्रों पर लगने वाली मुहर नहीं, बल्कि किसी देश के इतिहास, संस्कृति और उसकी विकास यात्रा का जीवंत साक्ष्य होते हैं। इसी ऐतिहासिक धरोहर को इंदौर के प्रतिष्ठित डाक टिकट संग्राहक आलोक खादीवाला ने दशकों की अथक मेहनत से सहेजा है। आलोक जी इंदौर के पहले सांसद और मध्य प्रदेश कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष, महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय कन्हैयालाल खादीवाला जी के सबसे बड़े पोते हैं।

खादीवाला परिवार की यह तीसरी पीढ़ी अपनी अलग-अलग रचनात्मक प्रतिभाओं से समाज में निरंतर योगदान दे रही है। आलोक खादीवाला के अलावा उनके दो छोटे भाई हैं— वैभव खादीवाला और सबसे छोटे भाई कपिल खादीवाला, जो कि फिल्म इंडस्ट्री के जाने-माने एक्टर और मॉडल हैं।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर स्वर्णिम सफलता

आलोक खादीवाला के इस जुनून और दुर्लभ संग्रह को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पटल पर सर्वोच्च सम्मान मिल चुका है। मध्य प्रदेश डाक विभाग द्वारा भोपाल में आयोजित 14वीं राज्य स्तरीय डाक टिकट प्रदर्शनी (MAPPEX 2025) में आलोक जी ने 'होलकर स्टेट के राजकोषीय वर्ग' में अपने उत्कृष्ट संग्रह का प्रदर्शन किया, जिसके लिए उन्हें प्रतिष्ठित 'गोल्ड मेडल' (स्वर्ण पदक) से सम्मानित किया गया। इसी प्रदर्शनी में उन्हें 'विशिष्ट संग्रह वर्मिल' के सम्मान के साथ-साथ 'अ जर्नी टू वर्ड्स विशिष्ट भारत' विषय पर बेहतरीन प्रदर्शन के लिए 'ब्रांज मेडल' (कांस्य पदक) से भी नवाज़ा गया।

राष्ट्रीय सीमाओं को पार करते हुए उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इंदौर का नाम रोशन किया है। साउथ अफ्रीकन फिलाटेलिक एक्जीबिशन 'सेवपेक्स-26' में, जहां 50 देशों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया था, आलोक जी ने 'द लीजेंड आफ लार्ड हनुमान अक्रॉस द कंट्रीज' विषय पर अपनी शानदार एक्जीबिट प्रस्तुत की। इस वैश्विक मंच पर उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उन्हें थीमैटिक और पोस्टल स्टेशनरी वर्ग में उच्च सर्टिफिकेट और मेडल से पुरस्कृत किया गया।

राष्ट्रपिता ने दादाजी को दिया था 'खादीवाला' उपनाम और अपना चश्मा

इस परिवार का राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से बेहद गहरा नाता रहा है। स्वर्गीय कन्हैयालाल जी के खादी के प्रति अटूट समर्पण को देखते हुए ही स्वयं गांधीजी ने उन्हें 'खादीवाला' उपनाम से नवाज़ा था।

आलोक की इस अमूल्य धरोहर में सबसे अनमोल रत्न है— महात्मा गांधी का इस्तेमाल किया हुआ असली चश्मा। वर्ष 1947 में आज़ादी के बाद कन्हैयालाल जी को राजस्थान के अजमेर में भड़के सांप्रदायिक दंगों को शांत करने के लिए भेजा गया था। अमन कायम करने के बाद जब वे दिल्ली लौटकर बापू से मिले, तो उन्होंने प्रसन्न होकर अपना चश्मा उन्हें भेंट कर दिया था। यह ऐतिहासिक चश्मा 1984 में कन्हैयालाल जी ने अपने देहांत से पूर्व आलोक को सौंप दिया था, जिसे उन्होंने आज भी एक पवित्र धरोहर की तरह सहेज कर रखा है।

10 हज़ार डाक टिकटों का विशाल साम्राज्य

स्कूल के दिनों में बाल दिवस के मौके पर एक प्रदर्शनी देखने के बाद आलोक के मन में फिलाटेली (डाक टिकट संग्रह) का जो शौक जागा, वह आज 10 हज़ार से अधिक डाक टिकटों और स्पेशल कवर्स के विशाल संग्रह में तब्दील हो चुका है। उनके पास आज़ादी के वर्ष 1947 में प्रकाशित हुए 'जय हिंद' सीरीज के तीन ऐतिहासिक डाक टिकट मौजूद हैं, जिन पर तिरंगा, अशोक स्तंभ और भारतीय वायुयान अंकित हैं।

महात्मा गांधी पर विश्वव्यापी डाक टिकट संग्रह उनके कलेक्शन का एक विशेष और उल्लेखनीय हिस्सा है। उनके पास लगभग 150 देशों में जारी 1000 से ज्यादा डाक टिकट, मिनिएचर और प्रथम दिवस आवरण (FDC) हैं। अकेले गांधीजी पर लगभग 100 देशों द्वारा जारी किए गए डाक टिकट उनके पास सुरक्षित हैं। इनमें पुर्तगाल में कपड़े पर बना गांधीजी का दुर्लभ डाक टिकट और ईरान, कोरिया, फिजी, स्विट्जरलैंड, मोनाको जैसे देशों द्वारा जारी टिकट शामिल हैं।

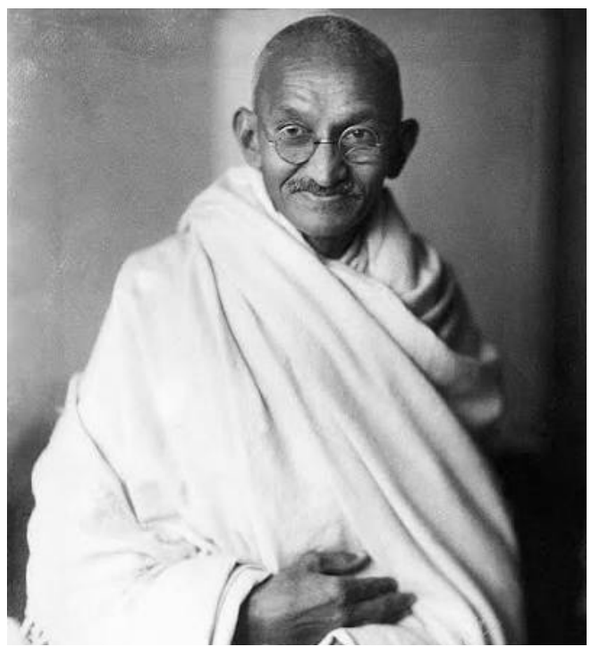
धर्म, संस्कृति और दुर्लभ मुद्राओं का अद्भुत संगम

आलोक का यह संग्रह केवल स्वाधीनता संग्राम तक सीमित नहीं है। उनके पास दुनिया भर में भगवान राम, श्रीकृष्ण, माता लक्ष्मी और हनुमान जी के साथ-साथ गणेश जी पर जारी डाक टिकटों का भी अद्भुत संसार है।

इनमें इंडोनेशिया द्वारा भगवान गणेश पर जारी टिकट, रामायण पर आधारित टिकट और राम मंदिर उद्घाटन के समय पब्लिश हुई बुकलेट भी शामिल है। इसके अलावा छत्रपति शिवाजी महाराज और रोटरी इंटरनेशनल (50 से अधिक देशों) से जुड़े डाक टिकट भी उनके पास मौजूद हैं।

डाक टिकटों के अलावा आलोक के पास सोने, चांदी और तांबे के 100 से अधिक दुर्लभ सिक्कों का खजाना भी है। इनमें विजयनगर साम्राज्य के सम्राट कृष्णदेवराय के समय का सोने का सिक्का, महारानी अहिल्याबाई होलकर के समय का बिल्वपत्र व शिवलिंग अंकित चांदी का सिक्का और छत्रपति शिवाजी महाराज के ज़माने की मुद्राएं शामिल हैं। आने वाली पीढ़ियों के लिए इस समृद्ध इतिहास को जीवंत रखने का आलोक खादीवाला का यह सफर अनवरत जारी है।

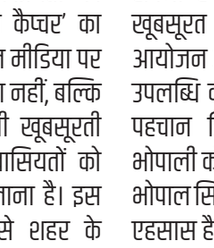
देश दर्पण संवाद इतिहास को सहेजने और अंतरराष्ट्रीय पटल पर देश का गौरव बढ़ाने के इस शानदार प्रयास को सलाम करता है।



BHOPAL CAPTURE

क्रीऐटर कॉर्नर

हमारे इस हफ्ते के क्रीऐटर



सोशल मीडिया के दौर में भोपाल की खूबसूरती, संस्कृति, खान-पान, पर्यटन और शहर की हर छोटी-बड़ी गतिविधि को लोगों तक पहुँचाने का काम कर रहा है लोकप्रिय इंस्टाग्राम पेज 'भोपाल कैप्चर'। इस डिजिटल प्लेटफॉर्म के संस्थापक अभिषेक बरोदिया हैं, जो अपने क्रिएटिव कंटेंट और वीडियो के माध्यम से भोपाल को एक अलग डिजिटल पहचान दिलाने की दिशा में लगातार प्रयासरत हैं।

जनवरी 2025 में शुरू हुए 'भोपाल कैप्चर' ने बहुत कम समय में सोशल मीडिया पर अपनी एक अलग पहचान बनाई है। आज इस इंस्टाग्राम पेज पर 19 हजार से अधिक फॉलोअर्स जुड़ चुके हैं, जो भोपाल के प्रति लोगों के प्यार और इस प्लेटफॉर्म की लोकप्रियता को दर्शाते हैं। 'भोपाल कैप्चर' का उद्देश्य सिर्फ सोशल मीडिया पर वीडियो पोस्ट करना नहीं, बल्कि भोपाल की असली खूबसूरती और शहर की खासियतों को लोगों के सामने लाना है। इस पेज के माध्यम से शहर के प्रमुख पर्यटन स्थलों, खूबसूरत कैफे, रेस्टोरेंट, फूड स्पॉट्स, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, त्योहारों, लाइव कॉन्सर्ट और शहर में होने वाले विभिन्न आयोजनों की झलक लोगों तक पहुँचाई जाती है।

अभिषेक बरोदिया अपने क्रिएटिव आइडियाज, वीडियो शूटिंग, एडिटिंग और डिजिटल मार्केटिंग के अनुभव के जरिए स्थानीय व्यवसायों, ब्रांड्स और आयोजनों को सोशल मीडिया पर नई पहचान दिलाने का प्रयास कर रहे हैं। उनका मानना है कि भोपाल में टैलेंट, टूरिज्म और बिजनेस की अपार संभावनाएँ हैं।

जरूरत है तो बस इन्हें सही डिजिटल प्लेटफॉर्म और रचनात्मक अंदाज में दुनिया के सामने लाने की। 'भोपाल कैप्चर' के जरिए अभिषेक का सपना है कि भोपाल की हर खूबसूरत जगह, हर खास आयोजन और शहर की हर नई उपलब्धि को एक ऐसी डिजिटल पहचान मिले, जिस पर हर भोपाली को गर्व हो।

भोपाल सिर्फ एक शहर नहीं, एक एहसास है और उस एहसास को कैमरे में कैद करना ही भोपाल कैप्चर की पहचान है।

रिवर्स स्विंग के बादशाह का लाल गेंद को आखिरी सलाम, मोहम्मद शमी ने टेस्ट क्रिकेट को कहा अलविदा

नई दिल्ली

लाल गेंद, सफेद जर्सी और हवा में उड़ती हुई विकेट की गिल्लियां। टेस्ट क्रिकेट में अब यह रोमांचक नजारा, कम से कम मोहम्मद शमी के हाथों तो देखने को नहीं मिलेगा। भारतीय क्रिकेट जगत से एक बड़ी और भावुक कर देने वाली खबर सामने आई है। रिवर्स स्विंग के जादूगर और टीम इंडिया के धाकड़ तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने टेस्ट क्रिकेट को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया है। शमी ने एक बेहद भावुक संदेश साझा करते हुए अपने इस बड़े फैसले की जानकारी दी। उन्होंने अपने प्रशंसकों और चाहने वालों का आभार जताते हुए लिखा, भारत के लिए सफेद जर्सी में खेलना मेरे जीवन का सबसे गर्व का पल रहा। यह महज एक खिलाड़ी का संन्यास नहीं है, बल्कि भारतीय टेस्ट इतिहास के उस युग का अंत है, जिसमें विदेशी पिचों पर भारतीय तेज गेंदबाजों ने अपना खौफ पैदा करना शुरू किया था। शमी ने 6 नवंबर 2013 को कोलकाता के ईडन गार्डन्स में वेस्टइंडीज के खिलाफ अपना पहला टेस्ट मैच खेला था। यह एक दिलचस्प संयोग है कि टेस्ट क्रिकेट में कदम रखने के ठीक 13 साल बाद उन्होंने इसी प्रारूप से संन्यास का ऐलान किया है। अपने शानदार करियर में शमी ने भारत के लिए 64 टेस्ट मैच खेले और 27.71 की गेंदबाजी औसत से 229 विकेट चटकाए। इस दौरान उन्होंने छह बार एक पारी में पांच विकेट लेने का कारनामा भी किया। उनका आखिरी टेस्ट मैच जून 2023 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल था, जो इंग्लैंड के द ओवल मैदान पर खेला गया था। शमी का वो रनअप, क्रीज पर आते ही गेंदबाजी की शानदार लय और गेंद का टप्पा खाकर दिशा बदलना, ये सिर्फ गेंदबाजी नहीं, बल्कि एक कला थी। विदेशी पिचों पर भारत को ऐतिहासिक जीत दिलाने में शमी के योगदान को क्रिकेट जगत हमेशा याद रखेगा। भले ही शमी अब टेस्ट प्रारूप में नजर नहीं आएंगे, लेकिन उनके दिए हुए अनगिनत यादगार पल, क्रिकेट इतिहास के पन्नों में हमेशा के लिए दर्ज हो गए हैं। देश दर्पण संवाद इस दिग्गज तेज गेंदबाज को शानदार टेस्ट करियर की ढेरों शुभकामनाएं देता है।



टीम इंडिया के फैसलों पर उठे गंभीर सवाल: शमी के बाद अब सिराज-कुलदीप बाहर, दिग्गज क्रिकेटर ने पूछा- "आखिर उसकी क्या गलती है?"



खेल डेस्क | देश दर्पण संवाद

भारतीय क्रिकेट टीम की चयन प्रक्रिया और प्लेइंग इलेवन के फैसलों को लेकर एक बार फिर विवाद खड़ा हो गया है। टीम मैनेजमेंट द्वारा पहले दिग्गज तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी और अब हालिया मैचों में मोहम्मद सिराज और स्पिनर कुलदीप यादव को अंतिम एकादश से बाहर रखने के फैसले ने क्रिकेट विशेषज्ञों और फैंस को हैरत में डाल दिया है। टीम के इस अप्रत्याशित कदम पर पूर्व भारतीय क्रिकेटर और मशहूर कमेंटेटर मुरली कार्तिक ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। हाल ही में जब टीम की प्लेइंग इलेवन का ऐलान हुआ और उसमें मोहम्मद सिराज का नाम नहीं दिखा, तो मुरली कार्तिक अपनी नाराजगी नहीं छिपा सके। उन्होंने टीम मैनेजमेंट की सोच पर सवाल उठाते हुए खुले तौर पर कहा, "आखिर उसकी (सिराज की) क्या गलती है?" कार्तिक का यह बयान इस बात की ओर इशारा करता है कि टीम में खिलाड़ियों को बाहर करने का आधार प्रदर्शन से ज्यादा कुछ और नजर आ रहा है। सिराज, जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में अपनी तेज गेंदबाजी से भारत को कई अहम मौकों पर जीत दिलाई है, उन्हें इस तरह से दरकिनार करना किसी के गले नहीं उतर रहा है। सिर्फ सिराज ही नहीं, बल्कि 'चाइनामैन' गेंदबाज कुलदीप यादव को भी बाहर बैठाने पर सवाल उठ रहे हैं। कुलदीप ने जब भी टीम में वापसी की है, उन्होंने अपनी फिरकी के जादू से अहम विकेट चटकाए हैं। ऐसे में फॉर्म में चल रहे इन मैच विनर खिलाड़ियों को बाहर रखना टीम इंडिया की रोटेशन पॉलिसी या रणनीति पर एक बड़ा प्रश्नचिह्न लगाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह के फैसलों से न केवल खिलाड़ियों का मनोबल गिरता है, बल्कि टीम का संतुलन भी बिगड़ता है। पहले मोहम्मद शमी को लेकर भी इसी तरह की स्थिति देखने को मिली थी। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि टीम मैनेजमेंट मुरली कार्तिक जैसे दिग्गजों की इस आलोचना का क्या जवाब देता है, और क्या सिराज व कुलदीप को आने वाले मुकाबलों में उनकी मेहनत का सही हक मिल पाएगा?

एशियन चैंपियंस ट्रॉफी पर भारत का छठी बार कब्जा, फाइनल में जापान को 4-1 से रौंदा

मोहाली। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने एशियाई हॉकी में अपनी बादशाहत को एक बार फिर साबित करते हुए एशियन चैंपियंस ट्रॉफी 2026 का खिताब अपने नाम कर लिया है।

मोहाली के ओलंपियन बलबीर सिंह सीनियर इंटरनेशनल हॉकी स्टेडियम में खेले गए रोमांचक फाइनल मुकाबले में भारत ने जापान को 4-1 के बड़े अंतर से शिकस्त दी। इस ऐतिहासिक जीत के साथ ही भारतीय टीम ने रिकॉर्ड छठी बार इस प्रतिष्ठित ट्रॉफी पर कब्जा जमाया है और लगातार तीसरी बार चैंपियन बनकर खिताबों की हैट्रिक भी पूरी की है।

खिताबी मुकाबले की शुरुआत भारत के लिए थोड़ी चुनौतीपूर्ण रही। मैच के तीसरे ही मिनट में जापान के काजुमासा मात्सुमोतो ने गोल दागकर अपनी टीम को 1-0 की शुरुआती बढ़त दिला दी।

पहले दो क्वार्टर तक जापानी डिफेंस ने भारतीय आक्रमण को रोके रखा। हालांकि, मध्यांतर के बाद भारतीय खिलाड़ियों ने गजब की वापसी की और आक्रामक हॉकी का प्रदर्शन करते हुए मैच का रुख पूरी तरह पलट दिया।

भारत की ओर से शिलानंद लाकड़ा, दिलप्रीत सिंह, जुगराज सिंह और विवेक सागर प्रसाद ने शानदार गोल दागकर टीम की जीत सुनिश्चित की। आखिरी क्वार्टर में भारतीय फॉरवर्ड पंक्ति ने जापानी रक्षापंक्ति को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया।

पूरे टूर्नामेंट में अजेय रहने वाली भारतीय टीम ने इससे पहले सेमीफाइनल में भी दक्षिण कोरिया को 8-1 से करारी मात देकर अपने इरादे साफ कर दिए थे।

घरेलू दर्शकों के जबरदस्त समर्थन के बीच हासिल की गई यह जीत आगामी अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों के लिए भारतीय टीम का मनोबल सातवें आसमान पर पहुंचाएगी। इस जीत के साथ भारत टूर्नामेंट के इतिहास की सबसे सफल टीम बनी हुई है।



डकार यूथ ओलंपिक में तन्वी पात्री का ऐतिहासिक कमाल, सिल्वर मेडल जीतकर रचा नया कीर्तिमान

डकार। भारत की उभरती हुई युवा बैडमिंटन खिलाड़ी तन्वी पात्री ने अंतरराष्ट्रीय खेल मंच पर तिरंगे की शान बढ़ाते हुए एक नया इतिहास रच दिया है। महज 15 वर्ष की आयु में तन्वी ने सेनेगल के डकार में आयोजित यूथ ओलंपिक गेम्स 2026 की बैडमिंटन स्पर्धा में रजत पदक अपने नाम किया।

इस उपलब्धि के साथ ही वह यूथ ओलंपिक के इतिहास में सिल्वर मेडल जीतने वाली पहली भारतीय महिला बैडमिंटन खिलाड़ी बन गई हैं।

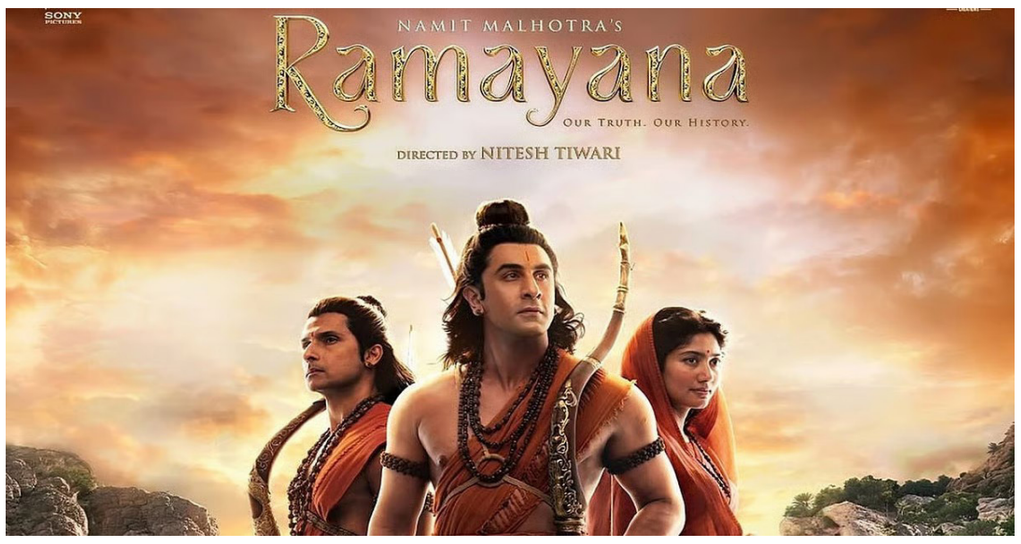
महिला एकल वर्ग के खिताबी मुकाबले में तन्वी का सामना चीन की मजबूत प्रतिद्वंद्वी झांग यी शिन से हुआ। फाइनल मैच में दोनों खिलाड़ियों के बीच शुरू से ही कांटे की टक्कर देखने को मिली।

तन्वी ने अपने तेजतर्रार स्मैश और शानदार कोर्ट कवरेज से चीनी खिलाड़ी को कड़ी चुनौती दी। हालांकि, बेहद रोमांचक और उतार-चढ़ाव भरे इस मुकाबले में तन्वी को मामूली अंतर से हार का सामना करना पड़ा और उन्हें रजत पदक से संतोष करना पड़ा।

स्वर्ण पदक से चूकने के बावजूद उनके जुझारू खेल ने सभी खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया।

मनोरंजनम्

फिल्म समीक्षा - रामायण: तकनीक की भव्यता और भावनाओं की दिव्यता का सफल संयोजन



मुंबई: सीता राम चरित अति पावन, मधुर सरस अरु अति मनभावन। पुनि पुनि कितनेहु सुने सुनाये, हिय की प्यास बुझत न बुझाये।। रामकथा की महत्ता को बयां करने वाला यह भावपूर्ण दोहा शाश्वत सत्य है। रामकथा का आकर्षण इतना व्यापक और विराट है कि वाल्मीकि जी से लेकर आज तक अनगिनत मनीषियों ने इसे अपने-अपने तरीके से गढ़ा है।

रामलीलाओं, टेलीविजन और सिनेमा के पर्दे पर कई बार प्रस्तुत होने के बावजूद श्रीराम का जीवन इतना बहुआयामी और प्रेरणादायी है कि इसे कितनी भी बार देख लें, मन नहीं भरता।

इसी अटूट आस्था को निर्देशक नितेश तिवारी और निर्माता नमित मल्होत्रा ने अपनी नई फिल्म 'रामायण' के जरिए भव्यतम रूप में प्रस्तुत करने का साहसिक प्रयास किया है। हॉलीवुड की तकनीकी उत्कृष्टता को टक्कर देने के उद्देश्य से बनाई गई यह फिल्म, दर्शकों की उम्मीदों पर काफी हद तक खरी उतरती है। कुछ कमियों को दरकिनार कर दें, तो बॉलीवुड को तकनीकी मोर्चे पर वैश्विक स्तर पर खड़ा करने का इस फिल्म का दावा मजबूत नजर आता है।

दृश्य और तकनीक:

वीएफएक्स (VFX) और फिल्मांकन के स्तर पर फिल्म अद्भुत है। विशेष रूप से सीता हरण के समय जटायु-रावण का संघर्ष और देवराज इंद्र के साथ रावण का युद्ध दर्शकों को रोमांचित कर देता है। 8 बार ऑस्कर जीत चुकी कंपनी 'DNEG' ने जटायु के किरदार को इतने महारत से गढ़ा है कि वे स्क्रीन पर पूरी तरह छा जाते हैं। अनुपम खेर की दमदार आवाज ने इस वीएफएक्स किरदार में प्राण फूंक दिए हैं।

निर्देशन और भावनाएं:

नितेश तिवारी के सामने सबसे बड़ी चुनौती 'तकनीकी भव्यता' के शोर में रामकथा की 'दिव्यता' को बचाए रखने की थी, जिसमें वे काफी हद तक सफल रहे हैं। वनवास गमन और सीता वियोग से जुड़े दृश्य भावनात्मक रूप से दर्शकों को गहराई से छूते हैं।

संगीत:

हंस जिमर और ए.आर. रहमान की जुगलबंदी ने बैकग्राउंड स्कोर (BGM) को बेहद प्रभावशाली बनाया है, जो फिल्म को 'लार्जर देन लाइफ' एहसास देता है। काश! रहमान ने फिल्म के गीतों पर भी BGM जैसा ही जादुई काम किया होता, तो यह फिल्म एक अलग ही ऊंचाई पर होती। फिर भी, संगीत उतना बुरा नहीं है, जितनी इसकी पूर्व में आलोचना हो रही थी।

अभिनय और कास्टिंग:

किरदारों को लेकर शुरुआत से ही जो संशय था, कलाकारों ने उसे दूर करने की पूरी कोशिश की है। श्रीराम के रूप में रणबीर कपूर और माता सीता के रूप में साईं पल्लवी ने अपना शत-प्रतिशत दिया है, हालांकि माता सीता के लिए कास्टिंग को और बेहतर किया जा सकता था।

वहीं, रावण के रूप में यश का 'ऑरा' (Aura) और स्क्रीन प्रेजेंस लाजवाब है। लक्ष्मण (रवि दुबे), शूर्पणखा (रकुल प्रीत सिंह) और विद्युतजिव्हा (विवेक ओबेरॉय) भी अपनी छाप छोड़ने में सफल रहे हैं।

सिनेमाई स्वतंत्रता और कमियां:

समीक्षा के नजरिए से कुछ रचनात्मक स्वतंत्रताएं खटकती हैं। उदाहरण के लिए, माता सीता का राक्षसों से युद्ध करना या शिव धनुष 'पिनाक' के भंग होने के बाद भगवान परशुराम की एंट्री की टाइमिंग अटपटी लगती है। वनवास के दौरान माता सीता द्वारा श्रीराम को सीधे नाम लेकर संबोधित करना भी थोड़ा असहज करता है। इसके अलावा, इतने सशक्त कथानक के बावजूद फिल्म कुछ बेहद यादगार और उद्धृत करने लायक संवाद (Dialogues) रचने में चूक गई है।

बॉक्स ऑफिस के कारोबारी नजरिए से, इस 'रामायण' की असली सफलता यह है कि इसने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की गाथा को ग्लोबली एक ग्रैंड कैनवास पर भव्यता के साथ प्रस्तुत किया है। सिनेमा की जिस शैली को आज की जेन-Z (Gen-Z) और जेन अल्फा पीढ़ी पसंद करती है, यह फिल्म उनके बिल्कुल अनुकूल है। देर रात के शोज़ में भी परिवारों और बच्चों की भीड़ यह साबित करती है कि फिल्म ने कामयाबी की पटकथा लिख दी है और यही इस भव्य 'रामायण' की असली सार्थकता है।

शहजाद पूनावाला बने 'राइज एंड फॉल सीजन 2' के विजेता, 35 लाख की इनामी राशि बाढ़ और सूखा पीड़ितों को की दान



मुंबई: अमेज़न प्राइम वीडियो और एमएक्स प्लेयर के बहुचर्चित रियलिटी शो 'राइज एंड फॉल सीजन 2' का खिताब राजनीतिक विश्लेषक शहजाद पूनावाला ने अपने नाम कर लिया है।

पूर्व भारतीय क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग द्वारा होस्ट किए गए इस शो के ग्रैंड फिनाले में शहजाद ने कड़ी टक्कर देते हुए अभिनेत्री प्रियंका चाहर चौधरी (फर्स्ट रनर-अप) और अभिनेता गौतम गुलाटी (सेकंड रनर-अप) को पछाड़कर चमचमाती ट्रॉफी जीती।

विजेता के तौर पर शहजाद को ट्रॉफी और 35 लाख रुपये की नकद पुरस्कार राशि का चेक सौंपा गया। उन्होंने दरियादिली दिखाते हुए अपनी इस पूरी 35 लाख रुपये की प्राइज मनी को असम और बिहार के बाढ़ पीड़ितों, तथा महाराष्ट्र के सूखा प्रभावितों के लिए दान करने का ऐतिहासिक ऐलान किया है।

यह सीजन प्रतियोगियों की मजबूत लाइन-अप के कारण काफी रोमांचक रहा। इसमें स्वरा भास्कर, करण पटेल, निहारिका तिवारी, तेज प्रताप यादव, सारा गुरपाल और सिवेत तोमर जैसे नामचीन चेहरों ने हिस्सा लिया था। वहीं, बिहार के चर्चित पत्रकार और यूट्यूबर मनीष कश्यप ने भी अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराई थी।

गेम के एक पड़ाव पर शहजाद की रणनीति के चलते मनीष कश्यप को 'बेसमेंट' (तहखाने) में जाना पड़ा और बाद में वे एलिमिनेट हो गए।

जीत के बाद शहजाद पूनावाला ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक पर अपने समर्थकों का आभार जताया। उन्होंने अपने खास अंदाज में लिखा, "पॉलिटिक्स में चायवाला, और रियलिटी टीवी में इस्त्री-वाला, संभाले नहीं संभलता"।

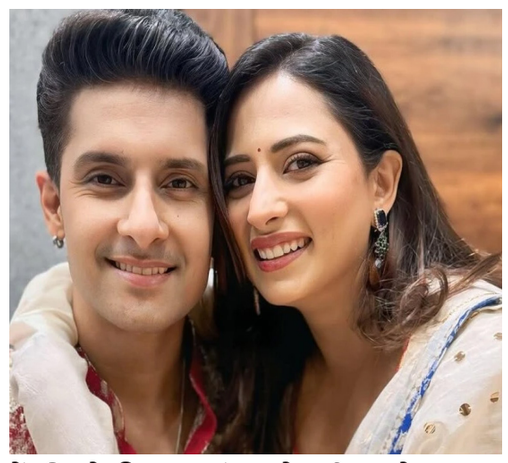
शहजाद ने अपनी इस जीत का पूरा श्रेय जनता के अपार प्यार और प्रभु श्री राम की कृपा को दिया है।

बड़े पर्दे पर 'लक्ष्मण' का किरदार जिएंगे रवि दुबे, पति की चौतरफा वाहवाही पर गदगद सरगुन बोलीं- "मेरा बंदा ही मेरा रब"

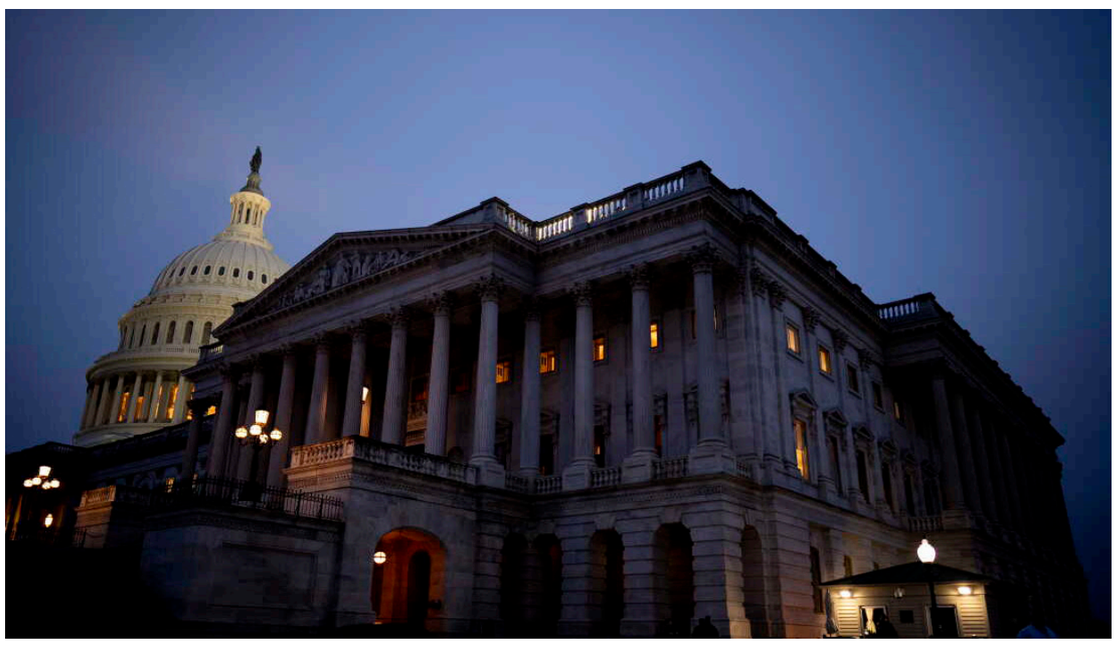
मुंबई: नितेश तिवारी के निर्देशन में आकार ले रही बहुचर्चित फिल्म 'रामायण' की हर छोटी-बड़ी हलचल पर दर्शकों की पैनी नजर है। इस महाकाव्य में भगवान राम के अनुज लक्ष्मण के महत्वपूर्ण किरदार के लिए टीवी के दिग्गज अभिनेता रवि दुबे को चुना गया है। जैसे ही बड़े पर्दे पर उनके इस दिव्य लुक और कास्टिंग की सुगबुगाहट सामने आई, फिल्म जगत से लेकर आम दर्शकों के बीच उनके अभिनय और समर्पण की जमकर सराहना होने लगी है।

पति रवि को मिल रहे इस अपार स्नेह और चौतरफा सम्मान से उनकी पत्नी व जानी-मानी अभिनेत्री सरगुन मेहता बेहद आह्लादित हैं। उन्होंने अपने जज्बातों का इज़हार करते हुए एक दिल छू लेने वाली बात साझा की है। सरगुन ने पति की कामयाबी पर गर्व करते हुए कहा, "मेरा बंदा ही मेरा रब।" उनका यह वाक्य महज़ एक प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि उस अटूट प्रेम और विश्वास का प्रमाण है, जो यह जोड़ी वर्षों से एक-दूसरे के साथ साझा करती आ रही है।

टेलीविजन स्क्रीन पर अपनी दमदार अदाकारी का लोहा मनवाने के बाद, अब बड़े पर्दे पर 'लक्ष्मण' के रूप में रवि दुबे की यह छलांग उनके करियर को एक नया आयाम दे रही है। मनोरंजन जगत में रवि और सरगुन हमेशा से एक आदर्श दंपत्ति माने जाते हैं। अब सरगुन के इस भावुक और उत्साहवर्धक संदेश ने न सिर्फ फैंस का दिल जीता है, बल्कि दर्शकों के बीच थिएटर्स में इस नई 'रामायण' को देखने की उत्सुकता भी और बढ़ा दी है।



अमेरिका में सत्ता संतुलन बदला: सीनेट और हाउस दोनों में डेमोक्रेट्स का कब्जा



नई दिल्ली/वाशिंगटन-
हाल ही में संपन्न हुए अमेरिकी मिडटर्म चुनावों में सत्ताधारी रिपब्लिकन पार्टी को बड़ा झटका लगा है। विपक्षी डेमोक्रेट्स ने 20 साल बाद ऐतिहासिक जीत दर्ज करते हुए हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स (प्रतिनिधि सभा) और सीनेट दोनों में बहुमत हासिल कर लिया है।

चुनाव के मुख्य आंकड़े:
हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में डेमोक्रेट्स ने 229 सीटें जीती हैं, जबकि रिपब्लिकन को 139 सीटें मिली हैं।
सीनेट में भी डेमोक्रेट्स 54 सीटों के साथ आगे हैं, जबकि रिपब्लिकन के पास 44 सीटें हैं।
राज्यों के गवर्नर पदों पर भी डेमोक्रेट्स (28) ने रिपब्लिकन (20) पर बढ़त बना ली है।
20 साल में यह पहली बार है जब मिडटर्म चुनावों में किसी सत्तारूढ़ दल का दोनों सदनों में सफाया हुआ है।

राष्ट्रपति ट्रम्प पर प्रभाव:
इस हार के बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का पद सुरक्षित है, लेकिन अगले दो साल तक वे बड़े और एकतरफा फैसले लेने में असमर्थ रहेंगे। अमेरिकी कांग्रेस पर नियंत्रण खोने के बाद उनके परिवार (बेटों और दामाद कुश्नर) की बिजनेस डील्स और एपस्टीन फाइलों जैसी जांचें शुरू होने की आशंका बढ़ गई है।
नतीजों पर प्रतिक्रिया देते हुए राष्ट्रपति ट्रम्प ने कहा कि उनका चेहरा बैलेट पेपर पर नहीं था, इसलिए उनके प्रत्याशियों को हार का सामना करना पड़ा।
वहीं, पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने इसे 'बांटने वाली सियासत' की हार और 'जोड़ने वाले लोगों' की जीत बताया है।

भारत और भारतवंशियों के लिए क्या हैं मायने?
इस चुनाव परिणाम का भारत पर भी असर पड़ेगा। अब ट्रम्प एच-1 बी (H-1B) वीजा और ग्रीन कार्ड के नियमों में आसानी से सख्ती या देरी नहीं कर पाएंगे। ट्रेड डील में भी भारत अब अपना पक्ष अधिक मजबूती से रख सकेगा।
चुनाव में 6 भारतवंशी उम्मीदवारों ने जीत का परचम फहराया है। इनमें फ्लोरिडा से जीतने वाली पहली भारतीय-अमेरिकी पिया डांडिया शामिल हैं। उनके अलावा सुहास सुब्रमण्यम, रो खन्ना, अमी बेरा, प्रमिला जयपाल और अरुणा मिलर ने भी डेमोक्रेटिक पार्टी के टिकट पर जीत दर्ज की है।
दूसरी ओर, ओहायो के गवर्नर पद के लिए रिपब्लिकन नेता और ट्रम्प के करीबी भारतवंशी विवेक रामास्वामी चुनाव हार गए हैं।

अमेरिका में छाई दीवाली की रौनक: 6 राज्यों और 22 शहरों में पहली बार सरकारी आयोजन



अमेरिका: अमेरिका के पैसिफिक नॉर्थवेस्ट इलाके में इस वर्ष दीपावली का पर्व ऐतिहासिक रहा। पहली बार 6 राज्यों और ग्रेटर सिएटल के 22 शहरों में सरकारी स्तर पर दीपावली समारोह आयोजित किए गए हैं।
इडाहो, नेब्रास्का, मोंटाना, नॉर्थ डकोटा और वॉशिंगटन के गवर्नर्स ने अपने सरकारी आवासों और स्टेट कैपिटल में दीये जलाकर इस पर्व को मनाया, जबकि ओरेगन में 10 नवंबर को अंतिम कार्यक्रम आयोजित होगा।
इन प्रतिष्ठित आयोजनों में अमेरिकी सांसद, सीनेटर, मेयर और बड़ी संख्या में भारतीय-अमेरिकी समुदाय के लोग शामिल हुए। भारतीय वाणिज्य दूतावास (सिएटल) के सहयोग से संपन्न हुए इन कार्यक्रमों में सभी गवर्नर्स ने राज्य की अर्थव्यवस्था, व्यापार और समाज सेवा में भारतीय समुदाय के अहम योगदान की जमकर सराहना की। नेब्रास्का और इडाहो जैसे राज्यों के गवर्नर्स ने भारतीय समुदाय को अपनी पहचान और परंपराओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।
इसके अलावा, ग्रेटर सिएटल के 22 शहरों (जिनमें करीब 2 लाख भारतीय-अमेरिकी बसते हैं) की सिटी काउंसिल्स में भी दीवाली की धूम रही।
इस अवसर पर कई अमेरिकी राज्य सरकारों ने औपचारिक घोषणाएं जारी करते हुए दीपावली को 'अंधकार पर प्रकाश की जीत' का प्रतीक बताया और अमेरिका में भारतीय संस्कृति के सकारात्मक प्रसार का स्वागत किया।

वैश्विक पर्यावरण संकट पर बड़ा फैसला: हरित ऊर्जा और तकनीकी सहयोग के लिए दुनिया के 190 देशों में बनी ऐतिहासिक सहमति



जेनेवा: पृथ्वी को लगातार बढ़ते तापमान और असंतुलित होते मौसम चक्र के खतरों से बचाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अभूतपूर्व सफलता मिली है।
संयुक्त राष्ट्र के विशेष तत्वावधान में आयोजित वैश्विक पर्यावरण शिखर सम्मेलन में दुनिया के 190 से अधिक देशों ने एक नए और व्यापक समझौते पर सर्वसम्मति से अपनी मुहर लगा दी है। इस रणनीति के अंतर्गत सभी प्रतिभागी देश आने वाले दशक में कार्बन उत्सर्जन में चरणबद्ध तरीके से बड़ी कटौती करने के लिए बाध्य होंगे।
इस बहुपक्षीय वार्ता के दौरान सबसे बड़ी चुनौती विकसित और विकासशील राष्ट्रों के बीच वित्तीय आवंटन को लेकर आ रही थी। कई दिनों तक चले मैराथन विचार-विमर्श के बाद आखिरकार यह तय हुआ कि अमीर देश, विकासशील और आर्थिक रूप से कमजोर देशों को पर्यावरण-अनुकूल तकनीक अपनाने के लिए एक विशेष 'क्लाइमेट फंड' के जरिए आर्थिक सहायता मुहैया कराएंगे।
पर्यावरण वैज्ञानिकों ने इस नीति को ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ साझा लड़ाई में एक युगांतरकारी कदम माना है।
नए नियमों के तहत अब सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और इलेक्ट्रिक परिवहन प्रणालियों के वैश्विक विस्तार को प्राथमिकता दी जाएगी।
हालांकि, कई स्वतंत्र पर्यावरण संगठनों का यह भी कहना है कि इस ऐतिहासिक समझौते की असली सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि सभी देश इसके कड़े नियमों को जमीनी स्तर पर कितनी ईमानदारी और तत्परता से लागू करते हैं।

व्यापार:-व्यवसाय:

"एआई बूम में आएगा करेक्शन": गीता गोपीनाथ की चेतावनी, अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है असर

● मयंक आनंद

नई दिल्ली: अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की पूर्व मुख्य अर्थशास्त्री गीता गोपीनाथ ने चेतावनी दी है कि दुनियाभर में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में हो रहा निवेश संभावित मूल्यांकन सुधार, यानी करेक्शन, की ओर बढ़ रहा है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय की प्रोफेसर गोपीनाथ ने राज शमानी के पॉडकास्ट में कहा, "मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि करेक्शन आएगा, लेकिन यह बताना असंभव है कि कब।"

एक ट्रिलियन डॉलर का निवेश
अनुमान है कि 2026 में अकेले एआई के बुनियादी ढांचे और विकास पर दुनियाभर में लगभग एक ट्रिलियन डॉलर खर्च होगा। अमेरिका, दक्षिण कोरिया और ताइवान जैसे देशों में इस तकनीक में भारी पूंजी लगाई जा रही है। गोपीनाथ का तर्क है कि निवेश के इस पैमाने के मुकाबले मुनाफे की संभावना पर सवाल उठते हैं। उन्होंने कहा कि यह समझाना कठिन है कि एआई लैब और कंपनियां इतना मुनाफा कैसे कमाएंगी, जिससे लगभग एक ट्रिलियन डॉलर का निवेश वसूल हो सके।

कड़ी प्रतिस्पर्धा बड़ी चुनौती
उनके अनुसार अत्यधिक प्रतिस्पर्धा वाले माहौल में यह देख पाना मुश्किल है कि सभी कंपनियां अपने मौजूदा मूल्यांकन को सही ठहराने लायक मुनाफा कमा पाएंगी। यानी बाजार में कई कंपनियां एक साथ बड़ी रकम लगा रही हैं, लेकिन कमाई का हिस्सा सबके लिए पर्याप्त होगा, इसकी गारंटी नहीं है।

अमेरिकी विकास दर पर खतरा
गोपीनाथ ने कहा कि एआई मूल्यांकन में बड़ी गिरावट का असर अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर गंभीर हो सकता है, क्योंकि वह काफी हद तक एआई से बनी संपत्ति पर निर्भर है। ऐसी स्थिति में अमेरिका की विकास दर शून्य या नकारात्मक दायरे में भी जा सकती है। उन्होंने बताया कि अमेरिका, ताइवान और दक्षिण कोरिया के बाजारों में तेजी की बड़ी वजह तकनीकी क्षेत्र की ऊंची मांग रही है। चूंकि ये बाजार आपस में गहराई से जुड़े हैं, इसलिए किसी एक बड़े एआई खिलाड़ी में गिरावट का असर तेजी से पूरी दुनिया में फैल सकता है।

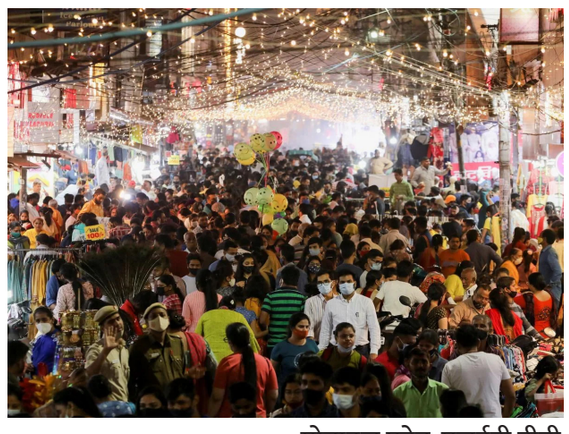
पैसे का "गोलाकार प्रवाह"
गोपीनाथ ने एआई उद्योग में पैसे के गोलाकार प्रवाह की ओर भी ध्यान दिलाया, जिसके कारण एक हिस्से की गिरावट पूरे तंत्र में फैल सकती है। उदाहरण के तौर पर उन्होंने एनवीडिया का नाम लिया। यह सूचीबद्ध कंपनी एआई लैब्स में पैसा लगाती है, और वही लैब्स उस पैसे से एनवीडिया की चिप खरीदती हैं। उन्होंने कहा कि अगर एनवीडिया या कोई एक एआई लैब ढह जाती है, तो इसका असर एनवीडिया पर भी पड़ेगा।



युवाओं के लिए सलाह
बदलते कार्यबल से जूझ रहे युवा पेशेवरों को गोपीनाथ ने "संज्ञानात्मक समर्पण" (कॉग्निटिव सरेंडर) से बचने की सलाह दी। उनका आशय यह है कि चैटजीपीटी या क्लॉड जैसे टूल्स पर आंख मूंदकर निर्भर होने के बजाय खुद समस्याएं सुलझाने का कौशल विकसित करना चाहिए।

क्यों अहम है यह चेतावनी
भारत समेत दुनिया के कई बाजारों में एआई से जुड़ी कंपनियों के शेयर निवेशकों की पसंद बने हुए हैं।

दिवाली पर बाजारों में रिकॉर्ड रौनक: दिल्ली में कारोबार एक लाख करोड़ पार, देशभर में सात लाख करोड़ का अनुमान



● कार्तिका गोठवाल

नई दिल्ली: दिवाली के त्योहार पर इस बार देश के बाजारों में जबरदस्त खरीदारी देखने को मिल रही है। कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के संकलित आंकड़ों के मुताबिक राजधानी दिल्ली में दिवाली से जुड़ा कारोबार रिकॉर्ड एक लाख करोड़ रुपये के पार निकल गया है। पूरे देश में यह कारोबार सात लाख करोड़ रुपये का आंकड़ा छूने की ओर बढ़ रहा है। शुक्रवार को धनतेरस पर बाजारों में खरीदारों की भारी भीड़ उमड़ी, जिसने इस कारोबार को नई ऊंचाई दी।
कैट ने शनिवार को जारी अपने बयान में बताया कि इस वर्ष कई श्रेणियों में असाधारण मांग दर्ज हुई है। सोना, चांदी और आभूषणों के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक सामान और घरेलू उपकरणों की भी जमकर बिक्री हुई। मोबाइल फोन, एलईडी टीवी, रेफ्रिजरेटर, वॉशिंग मशीन और एयर कंडीशनर जैसे उत्पादों की खरीदारी में खास तेजी रही। त्योहारी मौसम में लोग घर के लिए बड़े सामान खरीदना शुभ मानते हैं, और इस बार भी यही रुझान साफ दिखाई दिया।
परिधान बाजार में भी रौनक कम नहीं रही। साड़ियां, सूट, कुर्ते, तैयार कपड़े, बच्चों के कपड़े और पारंपरिक परिधान दुकानों से तेजी से बिके। पूजा और सजावट की सामग्री में मिट्टी के दीये, लक्ष्मी-गणेश की मूर्तियां, मिठाइयां और खाद्य उत्पादों की बिक्री में उछाल आया। कार, दोपहिया और व्यावसायिक वाहनों की मांग भी उत्साहजनक रही।

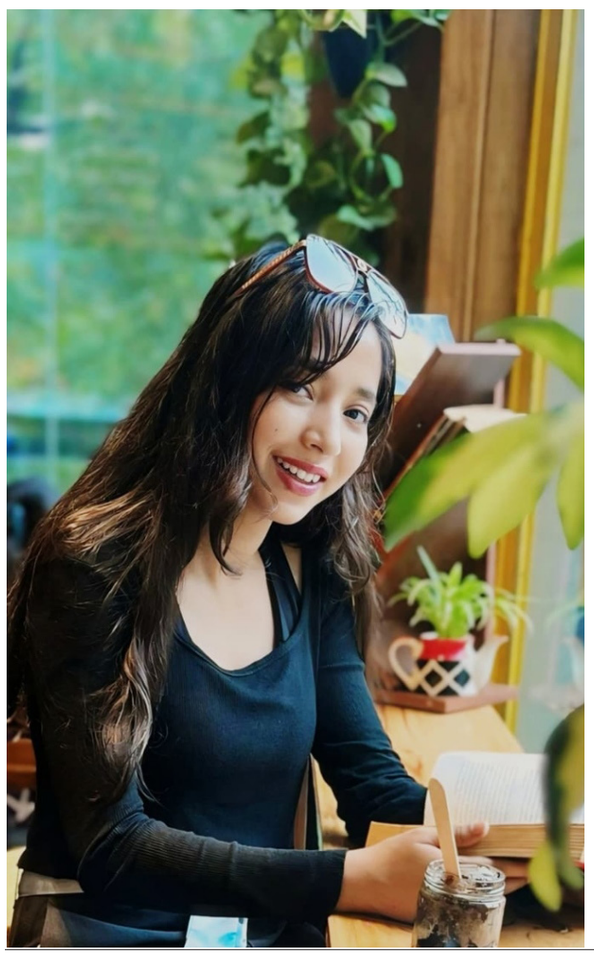
स्वदेशी उत्पादों को मिला भरपूर समर्थन
कैट के महासचिव और सांसद प्रवीन खंडेलवाल ने कहा कि इस साल के त्योहारी बाजार में एक बड़ा बदलाव साफ दिख रहा है, क्योंकि उपभोक्ता भारतीय उत्पादों को ज्यादा पसंद कर रहे हैं। उनके अनुसार प्रधानमंत्री के "वोकल फॉर लोकल" और "आत्मनिर्भर भारत" के आह्वान तथा स्वदेशी अपनाने का असर उपभोक्ताओं के व्यवहार में नजर आता है। खादी, हथकरघा उत्पाद, हस्तनिर्मित सजावटी सामान, स्थानीय कारीगरों की बनाई वस्तुएं और महिला स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों की मजबूत बिक्री हुई है। खंडेलवाल के मुताबिक भारतीय कारीगरों, निर्माताओं, लघु उद्योगों और स्थानीय उद्यमियों को ग्राहकों का जबरदस्त साथ मिल रहा है।

छोटे कारोबारियों से लेकर मजदूरों तक को फायदा
कैट का कहना है कि इस बड़े कारोबार का फायदा सिर्फ बड़ी दुकानों तक सीमित नहीं है। इसका सीधा और परोक्ष लाभ छोटे और मध्यम व्यापारियों, रेहड़ी-पटरी वालों और दिहाड़ी मजदूरों को मिल रहा है। सूक्ष्म और कुटीर उद्योग, स्वयं सहायता समूह, महिला उद्यमी और कारीगर भी इसमें शामिल हैं। इसके अलावा परिवहन संचालक, पैकेजिंग कारोबार, लॉजिस्टिक्स कंपनियां, डिलीवरी सेवाएं और घरेलू विनिर्माण से जुड़े लाखों लोग भी इस त्योहारी कमाई से लाभान्वित हो रहे हैं। यही कारण है कि दिवाली को देश की अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा उपभोग उत्सव माना जाता है।

पिछले साल से तुलना
कैट का अनुमान है कि नवरात्र से दिवाली तक के त्योहारी दौर में कुल कारोबार सात लाख करोड़ रुपये से ऊपर जा सकता है। यह पिछले साल के लगभग 6.05 लाख करोड़ रुपये के त्योहारी कारोबार के मुकाबले 15 से 18 प्रतिशत की बढ़ोतरी होगी। कैट ने इससे पहले धनतेरस के दिन के कारोबार को भी रिकॉर्ड 1.25 लाख करोड़ रुपये बताया था। संगठन के अनुसार देशभर में अब तक दिवाली कारोबार छह लाख करोड़ रुपये को पार कर चुका है, और बाजारों में ग्राहकों की लगातार आवाजाही को देखते हुए अंतिम आंकड़ा सात लाख करोड़ रुपये से ऊपर जाने की उम्मीद है।
पिछले साल की तस्वीर देखें तो कैट के आंकड़ों के मुताबिक सबसे ज्यादा हिस्सा किराना और एफएमसीजी का था, जो करीब 12 प्रतिशत रहा। इसके बाद सोना-आभूषण का हिस्सा 10 प्रतिशत और इलेक्ट्रॉनिक्स व इलेक्ट्रिकल का 8 प्रतिशत था। उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं और रेडीमेड कपड़ों की हिस्सेदारी 7-7 प्रतिशत रही। इस बार भी इन्हीं श्रेणियों में सबसे ज्यादा हलचल बताई जा रही है।

दिल्ली के व्यापारियों का संदेश
कैट ने इस मौके पर दिल्ली के लोगों का आभार जताया। खंडेलवाल ने कहा कि बाजारों में उमड़ी भारी भीड़ ने न सिर्फ व्यापारिक गतिविधियों को नई गति दी है, बल्कि एक सकारात्मक संदेश भी दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि 1 नवंबर को हुई विपक्षी रैली और पिछले एक महीने से दिल्ली में जारी धरना-प्रदर्शनों के कारण व्यापारियों को काफी नुकसान उठाना पड़ा था। उनके अनुसार दिल्लीवासियों ने बड़ी संख्या में बाजार पहुंचकर दिखा दिया कि वे त्योहार, आर्थिक गतिविधियों और व्यावसायिक जीवन को राजनीतिक व्यवधानों का बंधक नहीं बनने देना चाहते।
उन्होंने यह भी जोड़ा कि लोकतंत्र में हर किसी को शांतिपूर्ण विरोध का अधिकार है, लेकिन कोई भी राजनीतिक गतिविधि आम लोगों की आवाजाही, व्यापारियों की रोजी-रोटी और लाखों परिवारों की दैनिक कमाई की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। (ध्यान दें: ये बयान कैट के हैं, और विरोध प्रदर्शनों के नुकसान का आंकड़ा स्वतंत्र रूप से सत्यापित नहीं है।)
कुल मिलाकर, इस साल की दिवाली खरीदारी ने साफ संकेत दिया है कि त्योहारी मौसम में उपभोक्ता का भरोसा मजबूत है।

ग़ज़ल डेहरिया - एक व्यक्तित्व, अनेक पहचान और सृजन का अनवरत सफर



● प्रकाश त्रिपाठी

भोपाल: जीवन केवल एक तय रास्ते पर चलने का नाम नहीं है, बल्कि यह स्वयं को जानने, नई संभावनाओं को तलाशने और हर अनुभव से कुछ नया सीखने का एक खूबसूरत सफर है। इस सोच को चरितार्थ कर रही हैं मात्र 25 वर्ष की युवा और बहुमुखी प्रतिभा की धनी ग़ज़ल डेहरिया। मध्य प्रदेश के एक छोटे से गाँव 'तामिया' से ताल्लुक रखने वाली ग़ज़ल आज एक अभिनेत्री, लेखिका, कवयित्री, वेशभूषा अभिकल्पक (फैशन डिज़ाइनर), रूपसज्जा विशेषज्ञ (स्टाइलिस्ट) और एक प्रयोगधर्मी रचनात्मक व्यक्तित्व के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी हैं।

मातृत्व के भावनात्मक जुड़ाव से जन्मा लेखन

ग़ज़ल की शैक्षणिक यात्रा नौवीं कक्षा से ही भोपाल में आरंभ हो गई थी। परिवार में सबसे छोटी होने के कारण उनका अपनी माँ से विशेष लगाव था।

माँ से दूर रहकर पढ़ाई करने की इसी कसक और भावनात्मक जुड़ाव ने उनके भीतर शब्दों के प्रति प्रेम को जन्म दिया। उन्होंने अपनी पहली कविता अपनी माँ के लिए ही लिखी थी, जो केवल कुछ शब्द नहीं, बल्कि उनके गहरे अहसासों की साक्षात अभिव्यक्ति थी। यहीं से उनके लेखन का सफर शुरू हुआ।

इस यात्रा में उनके पिता का भी अहम योगदान रहा, जिन्होंने हमेशा उन्हें अपनी रुचि के अनुसार आगे बढ़ने और नए रास्ते तलाशने की पूर्ण स्वतंत्रता दी।

किस्मत नहीं, कड़ी मेहनत पर है विश्वास

साहित्य के क्षेत्र में ग़ज़ल को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उनकी एक बड़ी उपलब्धि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), गुवाहाटी के प्रतिष्ठित 'अलचेरिंगा उत्सव' के साहित्यिक चरण के भोपाल ऑडिशन में निर्णायक की भूमिका निभाना रहा है।

अक्सर लोग उनकी कामयाबी को अच्छी किस्मत का नाम देते हैं।

इस सोच का सटीक जवाब देते हुए ग़ज़ल अपनी लिखी पंक्तियों में कहती हैं:

"वो कहते हैं, अच्छी किस्मत है तुम्हारी,
शायद मेहनत से डरते हैं कुछ लोग,
इसलिए कामयाबी में भी ढूँढ़ते हैं तक़दीर हमारी।"

परिधान, कला और अभिनय की दुनिया

लेखन के साथ-साथ ग़ज़ल की रुचि अभिनय और परिधान सज्जा में भी बहुत गहरी है। मंच संचालन (एंकरिंग) के साथ उन्होंने कुछ फिल्मों में छोटे किरदार भी निभाए हैं और भविष्य में रूपहले पर्दे पर सक्रिय होने की आकांक्षा रखती हैं। परिधान अभिकल्पन (फैशन डिज़ाइनिंग) में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद उन्होंने कई प्रदर्शनियों में अपने डिज़ाइन किए परिधान प्रदर्शित किए हैं।

मुम्बई में बतौर रूपसज्जा विशेषज्ञ काम करने के बाद, अब वह अपना स्वयं का एक विशिष्ट और उत्कृष्ट परिधान ब्रांड स्थापित करने की दिशा में तेजी से काम कर रही हैं। इसके अतिरिक्त, संगीत, चित्रकारी और कथक नृत्य भी उनकी रचनात्मकता के अभिन्न अंग हैं।

शिक्षा और रोमांच का अनूठा संगम

ग़ज़ल का मानना है कि स्वयं को जानने के इस सफर में शिक्षा से नाता कभी नहीं टूटना चाहिए। बचपन से पढ़ाई में अव्वल रहने वाली ग़ज़ल ने गणित की छात्रा होने के बावजूद कला संकाय को चुना। उन्होंने राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर (एम.ए.) किया और संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की तैयारी भी की। इसी दौरान उन्हें एहसास हुआ कि उनकी स्वतंत्र सोच और कल्पनाशीलता किसी एक पारंपरिक करियर तक सीमित नहीं रह सकती।

अपने शैक्षणिक विस्तार को निरंतर जारी रखते हुए उन्होंने शिक्षा स्नातक (बी.एड.) किया और वर्तमान में विधि स्नातक (एलएल.बी.) की पढ़ाई कर रही हैं। रोमांच और प्रकृति से अगाध लगाव के चलते उन्होंने नेहरू पर्वतारोहण संस्थान से साहसिक खेल पाठ्यक्रम (एडवेंचर कोर्स) भी किया है और वह राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) का भी सक्रिय हिस्सा रही हैं।

महिलाओं और पाठकों के नाम ग़ज़ल का खास संदेश

'देश दर्पण संवाद' के सुधी पाठकों एवं विशेषकर महिलाओं को प्रेरित करते हुए ग़ज़ल ने कहा- "अपने सपनों को पूरा करने का अदम्य साहस रखें और कभी भी सीखना व आगे बढ़ना न छोड़ें। अपने आप को एक आज़ाद पंछी की तरह रखें और हमेशा कुछ नया सीखने के लिए तत्पर रहें, क्योंकि जीवन बहुत छोटा है और जानने के लिए बहुत कुछ है। केवल एक पहचान तक सीमित रहकर हम जीवन को समग्रता में नहीं जान सकते।"

उन्होंने आगे कहा, "हमेशा एक बच्चे की तरह जिज्ञासु रहें और किसी बात को केवल मान लेने के बजाय उसे गहराई से जानने और समझने का प्रयास करें। इससे आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा, आपको स्वयं को जानने का अवसर मिलेगा और आप ब्रह्मांड की असीमित शक्तियों को अपने भीतर महसूस कर सकेंगे।

खुद को नए अनुभवों, नए विचारों और नई संभावनाओं के लिए हमेशा खुला रखें। याद रखें, सफलता केवल अथक मेहनत, अटूट आत्मविश्वास और निरंतर प्रयास से ही प्राप्त होती है।"

जिनके जादुई संचालन से सज चुकी है 500 से अधिक मंचों की रौनक— जानिए बहुमुखी प्रतिभा की धनी मोनिका अहेलिया का प्रेरक सफर

● प्रकाश त्रिपाठी

भोपाल: राजधानी भोपाल की रहने वाली मोनिका अहेलिया ने मंच संचालन, मीडिया और कार्यक्रम प्रबंधन की दुनिया में अपनी एक ऐसी विशिष्ट पहचान स्थापित की है, जो हर किसी के लिए प्रेरणा है। मंच पर उनकी अपार ऊर्जा, दर्शकों को अंत तक बांधे रखने की कला और शानदार संवाद अदायगी उन्हें देश की चुनिंदा और बेहतरीन मंच संचालिकाओं की श्रेणी में ला खड़ा करती है। पिछले नौ वर्षों में उनके जादुई संचालन से मुंबई और बेंगलुरु सहित देश भर के 500 से अधिक आयोजनों के मंच सज चुके हैं।

बचपन के मंच से मिली उड़ान

मोनिका की कला यात्रा उनकी किशोरावस्था में ही शुरू हो गई थी। बचपन में ही उन्होंने 'चक धूम धूम' (मुंबई फाइनलिस्ट टीवी राउंड), 'बूगी वूगी' और 'इंडियाज गॉट टैलेंट' जैसे देश के प्रतिष्ठित डांसिंग रियलिटी शोज़ में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया और साबित किया कि वे कला के क्षेत्र में एक लंबा मुकाम हासिल करेंगी। उनकी इस लगन को तब पहली बड़ी पहचान मिली, जब वर्ष 2005 में राज्य संग्रहालय द्वारा उन्हें उनके पहले राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

व्यावसायिक जगत और प्रतिष्ठित ब्रांड्स में दबदबा

मोनिका ने मध्य प्रदेश (भोपाल और इंदौर) में लोकप्रिय टेलीविजन कार्यक्रम 'दस का दम' के लिए न केवल शानदार मेजबानी की, बल्कि पूरी टीम का सफल नेतृत्व भी किया।

सार्वजनिक कार्यक्रमों के अलावा प्रतिष्ठित व्यावसायिक संस्थानों में भी उनका गहरा प्रभाव है। उन्होंने मुंबई व बेंगलुरु सहित देशभर में फिक्की, जेके सीमेंट, पत्रिका समूह, दैनिक भास्कर, महिंद्रा, पैनासोनिक, लक्स, एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक, कोरोमंडल इंटरनेशनल, घड़ी, सुजुकी (सुजुकी ऑल इंडिया फिनाले), यामाहा क्रिकेट प्रीमियर लीग और 'एम्स रेटिना 7.0' (AIIMS Retina 7.0) जैसे नामचीन संस्थानों व बड़े आयोजनों की शानदार मेजबानी की है।

अपनी बहुमुखी प्रतिभा का विस्तार करते हुए उन्होंने 'मालाबार गोल्ड एंड डायमंड्स' और 'किसना' जैसे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय ज्वेलरी ब्रांड्स के लिए प्रतिष्ठित शूट भी किए हैं।

सिनेमा, सितारों के साथ मंच और पॉडकास्ट की दुनिया

मोनिका ने सुनिधि चौहान, दर्शन रावल, हंसराज रघुवंशी, एल्विश यादव और आशीष विद्यार्थी जैसी कई मशहूर हस्तियों के कार्यक्रमों का सफल संचालन किया है। डिजिटल मंच की फिल्म 'साइको सैयां' और फिल्म 'लव की अरेंज मैरिज' में वे अपने बेहतरीन अभिनय की छाप छोड़ चुकी हैं। विभिन्न एफएम (FM) स्टेशनों के साथ शो होस्ट के रूप में काम करने के बाद, उन्होंने हाल ही में मुंबई में अपना पॉडकास्ट 'एक मुलाकात आपके साथ' लॉन्च किया है। इसमें 'बिग बॉस' फेम रोहन मेहरा के साथ यूट्यूब पर रिलीज़ हुए उनके एपिसोड को दर्शकों की शानदार प्रतिक्रिया मिल रही है और इसे अब तक 96 हजार से अधिक बार देखा जा चुका है।

उनका यह पॉडकास्ट यूट्यूब के साथ-साथ स्पॉटिफाई, जियो ट्यून्स, गाना और इंस्टाग्राम जैसे प्रमुख डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर भी धूम मचा रहा है।

शिक्षा और पेशेवर अनुभव

वे केवल कला के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि उच्च शिक्षा और कॉर्पोरेट पेशेवर अनुभव में भी अग्रणी हैं। मोनिका ने विज्ञापन में वाणिज्य स्नातक (बी. कॉम) और मानव संसाधन व विपणन में स्नातकोत्तर (एमबीए) की डिग्री हासिल की है। उन्होंने बायजू, वेदांतु और आईसीआईसीआई बैंक जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में मानव संसाधन और जनसंपर्क प्रबंधन के रूप में भी अपनी पेशेवर सेवाएं सफलता के साथ प्रदान की हैं।

सम्मान और उपलब्धियां

उनके दमदार मंच संचालन और दर्शकों से जुड़ने की अद्भुत कला के लिए उन्हें साल 2023 में 'सर्वश्रेष्ठ महिला मंच संचालिका' और 2025 में 'इन्फ्लुएंसर्स अवार्ड्स' में 'सर्वश्रेष्ठ मंच संचालिका' के प्रतिष्ठित सम्मान से नवाजा गया है।

इसके अलावा, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता को दर्शाते हुए वे एनसीसी 'ए' ग्रेड प्रमाणित भी हैं।

प्रेरणा की मिसाल

'स्त्री रत्नम' के इस अंक में मोनिका अहेलिया का यह शानदार सफर हर उस युवा और विशेषकर महिलाओं के लिए एक बड़ी प्रेरणा है, जो अपनी प्रतिभा और कड़ी मेहनत के दम पर सफलता का आसमान छूना चाहते हैं।

उनकी यह कहानी साबित करती है कि अगर इरादे मजबूत हों, तो अपनी बहुमुखी प्रतिभा से किसी भी क्षेत्र में कामयाबी का परचम लहराया जा सकता है।



विविध संवादः

किस्मत के दरवाजे खोलेंगे आपके नाम के अंक: भोपाल में 15 नवंबर को 'द न्यूमेरिका' कार्यशाला का भव्य आयोजन



भोपाल: क्या आपके नाम की स्पेलिंग आपकी तरक्की में रुकावट बन रही है? या फिर आपके नाम में ही आपकी अपार सफलता का रहस्य छिपा है? जीवन के ऐसे ही अहम सवालों के जवाब देने और अंकों की जादुई दुनिया से रूबरू कराने के लिए, राजधानी भोपाल में 15 नवंबर को नाम अंकशास्त्र (Name Numerology) पर आधारित विशेष कार्यशाला 'द न्यूमेरिका' (The Numerica) का आयोजन होने जा रहा है।

'श्रेय इवेंट्स' की फाउंडर श्रेया सोनी के संयोजन में आयोजित इस ज्ञानवर्धक सेमिनार में सेंट्रल इंडिया और मध्य प्रदेश की जानी-मानी अंकशास्त्री 'द डिवाइन रूही' लोगों का मार्गदर्शन करेंगी।

नाम में छिपा है बदलाव का रहस्य

"आपके नाम का भी एक नंबर होता है, क्या आप इसका मतलब जानते हैं?"

इस दिलचस्प विषय पर केंद्रित यह सेमिनार बताएगा कि कैसे नाम की स्पेलिंग में किया गया एक बहुत ही मामूली बदलाव भी व्यक्ति के जीवन में चमत्कारिक और बड़े परिवर्तन (Big transformations) ला सकता है।

अक्सर लोग कड़ी मेहनत के बावजूद सफल नहीं हो पाते, जिसका कारण उनके नाम के अंकों का उनके ग्रहों के साथ तालमेल न होना हो सकता है।

कार्यशाला के प्रमुख आकर्षण:

इस सेमिनार में 'द डिवाइन रूही' प्रतिभागियों को नाम अंकशास्त्र की गहराई और उसके सटीक वैज्ञानिक तर्कों से अवगत कराएंगी। कार्यशाला में मुख्य रूप से इन विषयों पर चर्चा होगी:

• नाम अंकशास्त्र के पीछे का विज्ञान और उसकी बुनियादी बातें।
• किसी भी नाम का सटीक विश्लेषण करने की कला।
• सोए हुए भाग्य को जागृत करने वाली 'नाम सुधार तकनीकें' (Name Correction Techniques)।
• जीवन की रोजमर्रा की बाधाओं को दूर करने के बेहद आसान और सटीक उपाय।
•लाइव प्रैक्टिस और वास्तविक केस स्टडीज के माध्यम से ऑन-द-स्पॉट समाधान।

कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी:

• दिनांक और समय: 15 नवंबर 2026, दोपहर 3:00 बजे
• स्थान: पेज 3, चौथी मंजिल, जीएम टॉवर, 10 नंबर मार्केट (स्मार्ट पार्किंग के सामने), ई-4 अरेरा कॉलोनी, भोपाल
• प्रवेश शुल्क: नॉर्मल एंट्री - 555 रुपये | VIP एंट्री - 1,100 रुपये
• विशेष उपहार: VIP पास बुक करने वाले सभी प्रतिभागियों को एक सिद्ध 'पायराइट ब्रेसलेट' (Pyrite Bracelet) बिल्कुल मुफ्त भेंट किया जाएगा, जिसे धन और सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करने के लिए जाना जाता है।

अंकों की सकारात्मक शक्ति को समझकर एक बेहतर जीवन की ओर कदम बढ़ाने का यह शहरवासियों के लिए एक शानदार अवसर है। आयोजकों के अनुसार, सीमित सीटों के कारण बुकिंग पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर की जा रही है।

रोशनी बांटने वाले नगर निगम खुद 'डिफॉल्टर' के अंधेरे में: 16 निकायों पर 72.51 करोड़ का बिजली बिल बकाया

भोपाल: मध्य प्रदेश के जिन नगर निगमों पर शहरों को जगमग रखने और बेहतरीन नागरिक सुविधाएं देने की जिम्मेदारी है, उनका अपना वित्तीय प्रबंधन अंधकार में डूबा नजर आ रहा है। स्मार्ट सिटी और विकास के बड़े-बड़े दावों के बीच एक बेहद चौंकाने वाला सच सामने आया है। ताज़ा आंकड़ों के मुताबिक, प्रदेश के 16 प्रमुख नगर निगम बिजली विभाग के भारी-भरकम कर्ज तले दबे हैं। इन निकायों पर बिजली कंपनियों का कुल 72.51 करोड़ रुपये का बिल बकाया है।

यह आंकड़ा न सिर्फ प्रशासनिक लापरवाही को उजागर करता है, बल्कि निकायों की खोखली होती अर्थव्यवस्था की पोल भी खोलता है।

इंदौर और भोपाल का चौंकाने वाला हाल

सबसे ज्यादा हैरानी की बात यह है कि लगातार कई वर्षों से देश भर में स्वच्छता का सिरमौर बना 'इंदौर' इस अवांछित सूची में भी शीर्ष पर है। बिजली का बिल न चुकाने के मामले में इंदौर नगर निगम प्रदेश का सबसे बड़ा डिफॉल्टर बनकर उभरा है, जिस पर अकेले 23.71 करोड़ रुपये का भारी बकाया है। 'नंबर वन' शहर का वित्तीय अनुशासन के मामले में यह हाल कई गंभीर सवाल खड़े करता है। वहीं, प्रदेश की राजधानी भोपाल भी इस मामले में दूसरे पायदान पर है। इन दोनों महानगरों की तर्ज पर प्रदेश के अन्य 14 नगर निगम भी करोड़ों रुपये दबाए बैठे हैं और भुगतान करने में पूरी तरह नाकाम साबित हुए हैं।

आम आदमी पर सख्ती, सरकारी विभागों को छूट क्यों?

'देश दर्पण संवाद' के विश्लेषणात्मक अध्ययन में यह बात साफ होती है कि नगर निगमों के पास स्ट्रीट लाइट, पेयजल आपूर्ति (पंपिंग स्टेशन व फिल्टर प्लांट) और कार्यालयीन उपयोग के चलते बिजली की भारी खपत होती है। इसके बावजूद, संपत्ति कर और जल कर जैसी राजस्व वसूलियों में सुस्ती के चलते निकायों का



देश दर्पण संवाद | साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र | पंजीयन संख्या : MPHIN/26/A6588 प्रकाशक : असीत पाठक, 25, गोयल ग्रीन कॉलोनी, निपानिया, पोस्ट ऑफिस–विजय नगर, इंदौर, मध्य प्रदेश–452010 की ओर से स्वामी असीत पाठक के द्वारा प्रकाशित। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा।
संपादक : असीत पाठक। मुद्रक : पूनम विश्वकर्मा, विश्वकर्मा प्रिंटिंग प्रेस, H. No. 51/1, Village–Padri, Post Office–Gondwali, Block & Tehsil–Waidhan, Singrauli, Madhya Pradesh–486892 से मुद्रित। प्रकाशन स्थल : इंदौर, मध्य प्रदेश।